ओ३म्

पारस्कर गृह्यसूत्रम्

सभाषाभाष्यम्

समस्तजगदाधारम् जगदीशम्परात्परम् ।
नत्वा पारस्करंभाष्यम् कुर्वे संस्कारसिद्धिदम् ॥
भुजसप्ताङ्क चन्द्रेऽब्दे मार्गशीर्षेऽसिते दले ।
द्वितीयायां बुधे घस्रे भाष्यारम्भः कृतोमया ॥ २ ॥

काण्ड १ कण्डिका १ (कुश कण्डिका)

अथातो गृह्यस्थालीपाकानां कर्म ॥ १ ॥
परिसमुह्योपलिप्योल्लिख्योद्धृत्याभ्युक्ष्याग्निमुपसमाधाय दक्षिणतोब्रह्मासनमास्तीर्य प्रणीय परिस्तीर्यार्थवदासाद्य पवित्रे कृत्वा प्रोक्षणीः संस्कृत्यार्थवत्प्रोक्ष्य निरूप्याज्यमधिश्रित्य पर्यग्निकुर्यात् ॥२॥ स्रुवं प्रतप्य संमृज्याभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य निदध्यात् ॥३॥ आज्यमुद्वास्योत्पूयावेक्ष्य प्रोक्षणीश्च पूर्ववदुपयमनान् कुशानादाय समिधोऽभ्याधाय पर्युक्ष्य जुहुयात् ॥ ४ ॥ एष एव विधिर्यत्रक्वचिद्धोमः ॥ ५ ॥

भाषार्थः—(अथ) शब्द पूर्वाचार्य मङ्गल वाचक लिखतेथे तथा किसी बात के पूर्ण करने पीछे नई बात के आरम्भार्थ "अथ" आता है। (अतः) अब (स्थालीपाकानाम्) गृहस्थ में स्थित पुरुषों के लिये स्थालीपाकों की क्रिया कहते हैं। (परिसमुह्य) यज्ञ स्थलको कुशाओं से बटोर कर धूलि आदि दूर करके (उपलिप्य) गोबर मट्टी जलसे लेपन कर (उल्लिख्य) खैर के काष्ठ के बने हुये खांडे या स्रुवे से रेखा करे। (उद्धृत्य) रेखाओं से उठी मृत्तिकादि को अनामिका अंगुष्ठ से उठादे। (अभ्युक्ष्य) जल छिड़के (अग्निम् उप समाधाय) अग्नि को सामने रखकर (दक्षिणतो०) अग्नि से दक्षिणओर (पूर्वाभिमुख बैठा यजमान) अपने दाहिने हाथ ब्रह्मा का आसन बिछावे। उसपर वेदविद् ब्राह्मणकोवस्त्र भूषण पहिना कर बैठावे। (प्रणीय) प्रणीतामें जल भरे। (परिस्तीर्य) चारों ओर कुशा फैलावे (अर्थवत्०) अर्थात् प्रयोजन योग्य सामग्री को यथास्थान करे। (पवित्रे कृत्वा) दो पवित्री बना कर (प्रोक्षणीः संस्कृत्य) प्रोक्षणी को शुद्ध करके (अर्थवत् प्रोक्ष्य) प्रयोजनीय सब यज्ञवस्तुओं पात्रों कुशादि को साफ़ शुद्ध करके (निरूप्याज्यम्) घृतको देखकर (अधिश्रित्य) आज्यस्थाली को तपावे (पर्य्यग्निकुर्यात्) आज्यस्थाली के चारोंओर अग्निकरे अर्थात् घुमावे जलती लकड़ी घृतके चारों ओर घुमावे ऐसी रीतिहै। परन्तु हमारीसम्मतिमें उसपात्रको ऐसे घुमावे जो चारों ओरसे अग्निसे तपजावे। बहुत बड़ा घृतपात्र हो तो उसके चारों ओर जलती लकड़ी ही रखदे। जिससे घृत बिखरने हाथ के जलने का भय भी न रहै ॥२॥ (स्रुवं प्रतप्य) स्रुव को तपाकर (संमृज्य) मांज=साफ़ कर (अभ्युक्ष्य) जल से धोकर (पुनः प्रतप्य) फ़िर तपा कर

(निदध्यात) रक्खे ॥३॥ (आज्यं उद्वास्य) घृत को उतारकर (उत्पूय) ठीक नितारे (अवेक्ष्य) देख कर (प्रोक्षणीश्च) और प्रोक्षणीपात्रको भी (पूर्ववत) पहिले सूत्र२ में कहे अनुसार ही। (उपयमनान् कुशान् आदाय) उप यमन कुशाओं को लेकर (समिधोभ्याधाय) समिधाहोमकर जल छिड़ककर होमकरे ॥३॥ (एष एव०) यही विधि है जहां कहीं होम होता है ॥

भावार्थः—इसे कुशंकण्डिकानाम से कर्मटलोग कहतेहैं ॥

कण्डिका २ (आवसथ्याधान के सूत्र)

आवसथ्याधानं दारकाले ॥ १ ॥ दायाद्यकाल एकेषाम् ॥ २ ॥ वैश्यस्य बहुपशोर्गृहादग्निमाहृत्य ॥३॥ चातुष्प्राश्यपचनवत्सर्वम् ॥४॥ अरणिप्रदानमेके ॥५॥ पञ्चमहायज्ञा इति श्रुतेः ६ अग्न्याधेयदेवताभ्यः स्थालीपाकं श्रपयित्वाऽऽज्यभागाविष्ट्वाऽऽज्याहुतीर्जुहोति ॥ ७ ॥ "त्वन्नो अग्ने, सत्वं नो अग्ने, इमं मे वरुण, तत्त्वायामि, ये ते शतं, अयाश्चाग्ने, उदुत्तमं, भवतं नः" इत्यष्टौ पुरस्तात् ॥८॥ एवमुपरिष्टात् स्थालीपाकस्याग्न्याधेयदेवताभ्यो हुत्वा जुहोति॥९॥ स्विष्टकृते च ॥ १० ॥ "अयास्यग्नेः वषट्कृतम्, यत्कर्मणोऽत्यरीरिचम्,देवागातुविदः"इति॥११॥ बर्हिर्हुत्वा प्राश्नाति॥१२॥ततो ब्राह्मण भोजनम्१३

भावार्थ—(दारकाले) विवाह के समय (आवसथ्या-

धानम्) आवसथ्य अग्नि का स्थापन होता है ॥१॥ (एके-षाम् दायाद्यकाले) कोई आचार्यों के मत में दायभाग=पैतृ-कादि धन बांटनेके समय होता है। प्रत्येक गृहस्थी विवाह समय से ही अलग २ नित्य प्रति होम करें, कोई कहते हैं घर में एकत्र ही होम होवे परन्तु जब सम्पत्ति का विभाग करके जुदे २ घर बनावें तब अपने २ घर में जुदे २ होम किया करें ॥ २ ॥ बहुत पशु जिस वैश्य के हों ऐसे वैश्य के घर से अग्नि लाकर ॥ ३ ॥ * चातुष्प्राश्य पचन के समान सब विधि करे ॥ ४ ॥ कोई आचार्य अरणी देना कहते हैं [यजमान को अरणी देवै वह स्त्री पुरुष अग्नि निकालें] ५ पञ्चमहायज्ञ हैं ऐसी श्रुति है ॥६॥ अग्नि के आधेय देवताओं के लिये स्थालीपाक पका कर दो आज्याहुति देकर घृता-हुति देता है ॥ ७ ॥ "त्वन्नो अग्ने० (य० २१ । ३) सत्वन्नो अग्ने० (२१।४) इमं मे वरुण० (२१ । १) तत्त्वा यामि०(२१ । २) ये ते० (कात्या० २५ । ११) आयाश्चाग्ने (का० २५ । ११) उदु-त्तमम्० (य० १२।१२)भवतं नः(य०५।३)यह ८ पहिले आहुतिदे ॥ ८ ॥ स्थालीपाक के अग्न्याधेय देवतों की आहुति देकर फिर उक्त मन्त्रों से ८ आहुति देवे ॥ ९ ॥ और स्विष्टकृत आहुति भी देवे॥१०॥ अयास्याग्नेः० वषट् कृतम्, यत्कर्मणो० देवागातु विदो० इन मन्त्रों से आहुति दें॥ ११ ॥ वहिं होम करके प्राशन करताहै ॥१२॥ फिर ब्राह्मणोंको भोजनकरावे।१३।

* चातुष्प्राश्य अन्न ऋत्विजों के लिये पकाया जाता है । कात्या० ४ । १९८—२०४ तक देखो । कर्काचार्य ने लिखा है कि चातु० पचन श्रौतकर्म है । अतः सर्वत्र नहीं है यही जयराम का मत है ॥

कण्डिका ३ (अर्घविधि-मधुपर्क विधि)

षडर्घ्या भवन्त्याऽऽचार्यऋत्विग्-वैवाह्यो राजा, प्रियः, स्नातक, इति ॥१॥ प्रतिसंवत्सरा-नर्हयेयुः ॥२॥ यक्ष्यमाणा स्त्वृत्विजः ॥३॥ आ-सनमाहार्याह 'साधुभवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्, इति ॥ ४ ॥ आहरन्ति विष्टरंपाद्यं पादार्थमुदकमर्घमाचमनीयंमधुपर्कं दधिमधुघृत मपिहितंकाꣳस्ये काꣳस्येन ॥५॥ अन्यस्त्रिःत्रिः प्राह विष्टरादीनि ॥६॥ विष्टरं प्रतिगृह्णाति॥७॥ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमंत-मभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति, इत्येनम-भ्युपविशति ॥८॥ पादयोरन्यं ॥९॥ विष्टर आ-सीनाय सव्यं पादं प्रक्षाल्य दक्षिणंप्रक्षालयति ॥ १० ॥ ब्राह्मणश्चेद्दक्षिणं प्रथमम् ॥ ११ ॥ विराजोदोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयिपा-द्यायै विराजोदोहः'इति ॥१२॥ अर्घं प्रतिगृह्णाति 'आपः स्थयुष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि', इति ॥ १३ ॥ निनयन्नभिमन्त्रयते 'समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत । अरिष्टाऽ-स्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः, इति ॥ १४ ॥ आचामति, 'आमागन् यशसा सꣳ सृजवर्चसा

त्वं माकुरुप्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामशिष्ठं तनूनाम्,इति ॥ १५ ॥ मित्रस्यत्वेति मधुपर्कंप्रतीक्षते ॥ १६ ॥ देवस्यत्वेति प्रतिगृह्णाति ॥१७॥ सव्येपाणौकृत्वा दक्षिणस्यानामिकया त्रिः प्रयौति ' नमः श्यावास्यायान्नशनेयत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि,इति ॥ १८ ॥ अनामिकांगुष्ठेन चत्रिर्निरुक्षयति ॥१९॥ तस्य त्रिः प्राश्नाति"यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यं । तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येनपरमो मधव्योऽन्नादोऽसानि,इति ॥२०॥ मधुमतीभिर्वा प्रत्यृचम् ॥ २१ ॥ पुत्रायान्तेवासिनेवोत्तरत आसीनायोच्छिष्टं दद्यात् ॥ २२ ॥ सर्वं वा प्राश्नीयात् ॥ २३ ॥ प्राग्गाऽसंचरे निनयेत् ॥ २४॥आचम्य प्राणान् संमृशति–'वाङ् म आस्ये, नसोः प्राणः,अक्ष्णोश्चक्षुः,कर्णयोः श्रोत्रम्, बाह्वोर्बलम्, ऊर्वोरोजः, अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह' इति ॥ २५ ॥

"आचान्तोदकाय शासमादाय गौरिती त्रिः प्राह॥२३॥ प्रत्याह, माता रुद्राणां दुहिता वसूनाꣳ स्वसाऽऽदित्यानाम मृतस्य नाभिः । प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागाम दितिं वधिष्ट । ममचामुष्य च पाप्मानꣳहनोमि,इति यद्यार-

लभेत ॥ २७ ॥ अथ यद्युत्सृजेत् 'ममचामुष्यः च पाप्मा हतः, ओमुत्सृजत तृणान्यत्तु, इति ब्रूयात् ॥ २८ ॥ नत्वेवामांसोऽर्घः स्यात् ॥२९॥ अधियज्ञमधिविवाहं कुरुतेत्येव ब्रूयात् ॥ ३० ॥ यद्यप्यसकृतं संवत्सरस्य सोमेन यजेत कृतार्घ्या एवेनं याजयेयुर्नाकृतार्घ्याः, इति श्रुतेः ॥ ३१ ॥

भावार्थ—आचार्य १ ऋत्विज् २ विवाहवालावर ३ राजा ४ प्रियमित्र ५ स्नातक ६ यह छः अर्घ के योग्य होते हैं ॥१॥ प्रतिवर्ष पूजने चाहियें ॥ २ ॥ जब जब यज्ञ करे तब तब ही ऋत्विजों का पूजन करें ॥ ३ ॥ आसन हाथ में लेकर कहता है कि हम आप को पूजेंगे भले प्रकार बैठिये ॥४॥ आसन लाते हैं बैठने कों, पाद्य=पग धोने को जल, अर्घ, आचमन को जल, और मधुपर्क को दधि, शहत, घृत ढका हुआ कांसी के पात्र में कांसी ही के पात्र से ढका हुवा ॥ ५ ॥ यजमान के अतिरिक्त कोई अन्यपुरुष विष्टरादि को विष्टरो विष्टरो विष्टरः ऐसे ३ । ३ वार कहै ॥६॥ विष्टर लेता है ॥७॥ वर्ष्मोस्मि० इस मन्त्र को पढ़ कर विष्टर पर बैठता है ॥८॥ अन्य आचार्यों का मत है कि पाहों के नीचेही विष्टर रक्खे विष्टर पर बैठे का बांया पग धुलाने के पीछे दक्षिण पग धुलावे ॥ १० ॥ ब्राह्मण हो तो पहिले दक्षिणपग धुलावे ११ "विराजो दोहो०" इस मन्त्र से ॥ १२ ॥ "आपस्थ०" इस मन्त्र से अर्घ ॥ १३ ॥ "समुद्रंवः०" इस मन्त्र को पढ़ता हुवा अर्घ के जल को भूमि पर छोड़ता है ॥१४॥ 'आमागन्' इस मन्त्र से आचमन करता है ॥ १५ ॥ मित्रस्य त्वा० इस मन्त्र से (मधुपर्क को) हाथ में लेता है ॥ १७ ॥ बायें हाथ में लेकर दहिने हाथ की अनामिका से "नमः श्यावा०" इस मन्त्र से घोलता है ॥ १८ ॥ अनामिका और अंगूठे से तीन वार छींटा देता है ॥ १९ ॥ 'यन्मधुनो' इस मन्त्र से

तीन वार मधुपर्क चाटता है ॥ २० ॥ वा " मधुमती० " इस से ३ प्रति ऋचाओं से ३ वार मधुपर्क भक्षण करै ॥२१॥ उत्तर की ओर बैठे पुत्र वा शिष्य को मधुपर्क का झूठन=उच्छिष्ट देदे ॥ २२ ॥ या सब ही चाटले ॥ २३ ॥ या पूर्वकी ओर गढ़े में बखेर दे ॥ २४ ॥ आचमन कर वाङ्‌ मे० इत्यादि कह कर अङ्ग स्पर्श करता है ॥२५॥ (उदकाय *शासं आदाय) जल के लिये आज्ञा लेकर (आचम्य) आचमन करके गौः गौः गौः ऐसा तीनवार कहै। अथवा जलसे आचमन किये अर्घ्य से आज्ञा लेकर गौः ३ कहै वर " माता रुद्रा० " इस मन्त्र को पढ़े। गौ को ब्राह्मण ग्रहण करै वा छोड़ दे ॥ २६–२९ ॥ प्रति यज्ञ प्रति विवाहमें गोदान किया जाताहै ऐसा कहै॥३०॥ यद्यपि वर्ष में कई वार सोमयाग करै तौ भी प्रति यज्ञ में ही अर्घादि देवे क्योंकि श्रुति में बतया है कि अर्घ किये हुवे ही इस यजमानको यज्ञकरावैं विना अर्घ पाये न करवे॥

---

* शासं का अर्थ हरिहरादि भाष्यकार खङ्ग करते है। हमारी समझ में शासं का अर्थ आज्ञा ही ठीक है ॥

अथवा हमारी सम्मतिमें यह २५ से २९ तक ५ सूत्र वाममार्ग के मिलाये हैं क्योंकि मधुपर्क हो चुका, खा भी चुके, आगे गौ की प्रशंसा है कि यह गौ रुद्रों की माता, वसुओं की बेटी आदित्यों की भगिनी अमृत की नाभि है। विचारवान् पुरुषों को मैं कहता हूं (अनागाम्) निष्पाप (गाम्) गौ को (मा वधिष्टः) मत मारो। यह मन्त्र किसी प्रामाणिक ग्रन्थ या वेद वाक्य नहीं तौ भी न मारने की आज्ञा है। गौ की प्रशंसा है। जब अर्घ्य पूजनीय राजादि ही निषेध करना है फिरभी वहकार्य करना आज्ञाभंग पापभी है ॥

कण्डिका ४ (होम से पूर्व कृत)

चत्वारः पाकयज्ञा हुतोऽहुतः प्रहुतः प्राशित इति ॥१॥ पञ्चसु बहिः शालायां विवाहे चूडाकरणे उपनयने केशान्ते सीमन्तोन्नयन इति ॥२॥ उपलिप्तऽउद्धृतावोक्षितेऽग्निमुपसमाधाय ॥ ३ ॥ निर्मन्थ्यमेके विवाहे ॥ ४ ॥ उदगयन आपूर्यमाण पक्षे पुण्याहे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात् ॥ ५ ॥ त्रिषु त्रिपूत्तरादिषु ॥ ६ ॥ स्वातौ मृगशिरसि रोहिण्यां वा ॥ ७ ॥ तिस्रो ब्राह्मणस्यानुपूर्व्येण ।८। द्वे राजन्यस्य ॥ ९ ॥ एका वैश्यस्य ॥ १० ॥ सर्वेषाꣳ शूद्रामप्येके मन्त्रवर्जम् ॥ ११ ॥ अथैनां वासः परिधापयति 'जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवा कृष्टीनामभिशस्तिपावा। शतं च जीव शरदः सुवर्च्चा रयिं च पुत्रा ननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः, इति ॥ १२॥ अथोत्तरीयम्—'या अकृन्तन्नवयन् या अतन्वत याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ। तास्त्वा देवी र्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वास" इति ॥ १३ ॥ अथैनौ समञ्जयति "समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृद-

यानिनौ। संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ " इति ॥ १४ ॥ पित्रा प्रत्तामादाय गृहीत्वा निष्क्रामति " यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनुपवमानो वा । हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु असौ " इति ॥१५॥ अथैनौ समीक्षयति "अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः । वीरसूर्देवकामास्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे " । सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः । तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः । सोमोऽददद्गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददद्ग्नये । रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् । तां पूषन् शिवतमा मेरयस्व सान ऊरूउशती विहर । यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपं यस्यामु कामा बहवो निविष्ट्येइति

भावार्थ—१ हुत,२ अहुत,३ प्रहुत ४ प्राशित, यह चार पाक यज्ञहैं। ।१ विवाह । २ मुंडन । ३ यज्ञोपवीत ४केशान्त ५सीमन्तोन्नयन इन पांच संस्कारों में बाहर की शाला में होते हैं (अर्थात् दो दो शाला बनावे) ॥२॥ लेपन की उद्धृत की छिड़के भूमि में अग्नि को सामने स्थापित कर के ॥ ३ ॥ आचार्य विवाह में अग्नि को मंथन कर स्थापित करे यह उत्तरायण में शुक्लपक्ष में शुभ दिन में कुमारी ॥ ४ ॥ कन्या का पाणिग्रहण करे॥५॥ उत्तराफाल्गुनी,हस्त,चित्रा,उत्तरा-

षाढा, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी इन नक्षत्रों में॥६॥ या स्वाति, मृगशिर, रोहिणीमें (विवाह करे) वर्ण क्रमसे ३ वर्णों की ब्राह्मण की (स्त्री) ॥८॥ दो क्षत्रियकी ।९॥ १ वैश्य की ॥१०॥ विवाह योग्य है। कोई आचार्य शूद्राको चारों वर्णों की स्त्री योग्य बताते हैं, विनाही मन्त्र पढ़े ॥११॥ जरांगच्छ० इस मन्त्र से अग्नि स्थापन के बाद अब इसे वस्त्र पहिनाता है ॥ १२ ॥ इस के पीछे "या अकृ०" इस मन्त्र से ओढना (उढावे) ॥ १३ ॥ तदुपरान्त " समंजन्तु० " इस मन्त्र से इन दोनो वधूवरों को सन्मुख करता है ॥ १४ ॥ पितासे दी हुई कन्या को ले हाथ पकड़ कर " यदैपि० " इस मन्त्र से चलता है अघोरचक्षु० इन मन्त्रोंसे परस्पर देखते हैं ॥१६॥

कण्डिका ५ (विवाह होम)

प्रदक्षिणमग्निं पर्य्याणीयैके ॥१॥ पश्चादग्नेस्तेजनीं कटं वा दक्षिणपादेन प्रवृत्योपविशति ॥२॥ अन्वारब्ध आघारावाज्यभागौ महाव्याहृतयः सर्वप्रायश्चित्तं प्राजापत्यꣳ स्विष्टकृच्च ॥ ३ ॥ एतन्नित्यꣳ सर्वत्र ॥४॥ प्राङ् महाव्याहृतिभ्यः स्विष्टकृदन्यच्चेदाज्याद्धविः ॥ ५ ॥ सर्वप्रायश्चित्तं प्राजापत्यान्तर मेतदावापस्थानं विवाहे ॥६॥ राष्ट्रभृत इच्छञ्जयाभ्यातनांश्च जानन् ॥ ७ ॥ येन कर्मणेर्त्सेदिति वचनात् ॥ ८ ॥ चित्तं च चित्तिश्चाकूतंचाकूतिश्च विज्ञातं च वि-

ज्ञातिश्च मनश्च शक्करीश्च दर्शश्च पौर्णमासं च बृहच्च रथन्तरं च। प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु। तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः स उग्रः स विहव्यो बभूव स्वाहा, इति ॥ ९ ॥ अग्निर्भूतानामधिपतिः स माऽवतु इन्द्रो इति ॥ ९॥ अग्निर्भूतानामधि पतिः स माऽवतु। इन्द्रो ज्येष्ठानाम्। यमः पृथिव्या। वायुरन्तरिक्षस्य। सूर्योदिवः। चन्द्रमा नक्षत्राणाम्। बृहस्पतिर्ब्रह्मणः। मित्रः सत्यानाम्। वरुणोऽपाम्। समुद्रः स्रोत्यानाम्। अन्नं साम्राज्यानामधिपति तन्माऽवतु। सोम ओषधीनां, सविताप्रसवानां। रुद्रः पशूनां। त्वष्टा रूपाणां। विष्णुः पर्वतानां। मरुतो गणानामधिपतयस्ते माऽवन्तु। पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहाः इह मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहुत्याᳫं स्वाहा; इति सर्वत्रानुषजति। १०। अग्निरैतु प्रथमो देवताना७ं सोस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदयᳫं राजा वरुणाऽनुमन्यतां यथेयᳫंस्त्री पौत्र-

मघन्न रोदात्, स्वाहा। इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभिविबुध्यतामियथं स्वाहा। स्वस्तिनो अग्ने दिव आपृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रथं स्वाहा। सुगन्तु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं मआगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा, इति।११। परं मृत्यविति चैके प्राशनान्ते।१२।

भावार्थ—कोई आचार्य अग्निपरिक्रमाके पीछे उक्त विधि को मानते हैं।१। अग्नि के पश्चिमभाग में तृणमय आसन पूला या बोरिया बुना हुवा बिछाकर बैठे॥२॥ ब्रह्मा से आज्ञा लेकर आघार आज्यभाग २।२ आहुतिदे। महाव्याहृतियों से।३। सर्व प्रायश्चित्ताहुति १ प्राजापत्य आहुति १ स्विष्टकृत् भी १ आहुति दे॥३॥ यह सर्वत्र होमों में नित्य कर्म है॥४॥ यदि घृत के सिवाय अन्य चरु भी होम को हो तो महाव्याहृतियों से पूर्व स्विष्टकृत् आहुति होती है। ॥५॥ सर्व प्रायश्चित्त और प्राजापत्य होम के बीच में यह अवापस्थान विवाह में होता है॥६॥ राष्ट्रभृत की इच्छा करता हुवा और जय तथा अभ्यातन को जानता हुवा होमे॥७॥ येन कर्मणेर्त्संतत्रहोतव्या ऋध्नोत्येवतेन. कर्मणा (तै०

सं० ३।४।६) इस वचन से (ज्ञात होता है कि) जिस कर्म की ऋद्धि चाहे उसी मन्त्र से होम करे॥ ७॥ जय होम के मन्त्र (९ सूत्र में चित्तं च० इस में बताये हैं स्वाहा शब्द लगा कर होम होता है जो पद्धति में लिखेंगे)। ९ सूत्र ।१०। ११ से अभ्यातन होम होता है यह भी पद्धति में लिखेंगे। परंसृत्यो अनु० इस मन्त्र से भी आहुति देवे। कोई आचार्य कहतेहैं कि संस्रव प्राशनके पीछे इस मन्त्रसे आहुतिदेवे॥१२॥

छठी कण्डिका—(लाजा होम)

कुमार्या भ्राता शमी पलाश मिश्रांल्लाजानं जलिनांजलावावपति ।१। ताञ्जुहोति सꣳहतेन तिष्ठन्ती 'अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत। स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा। इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका,आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा। इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियꣳ स्वाहा, इति।२।अथास्यै दक्षिणꣳ हस्तं गृह्णाति सांगुष्ठम्—गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः। भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः। अमोहमस्मि सा त्वꣳ सा त्वमस्यमो अहं, सा माहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं। तावेहि

श्विवहावहै सहरेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून् ते सन्तु जरदष्टयः। संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदःशतꣳशृणुयामशरदः शतमिति३

भावार्थ-कन्या का भाई जांड़ के पत्ते मिली धान कीखीलों को अंजलिसे (कन्या की) अंजलि पर छोड़ता है ॥ १॥ यह कन्या खड़ी हुई पतिकी अंजलिके साथ "अर्यमणम्" इत्यादि मन्त्रों से आहुति देती है ॥२॥ अत्र इस के दक्षिण हाथ को अंगूठे सहित वर पकड़ता है "सौभगाय त्वा०" यह मन्त्र बोलता है ॥ ३ ॥ ६ ॥

अथैनामश्मानमारोहयत्युत्तरतोऽग्नेर्दक्षिणपादेन 'आरोहेममश्मानमश्मेव त्वꣳस्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायत इति ॥ १ ॥ अथ गाथां गायति 'सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवती। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः। यस्यांभूतꣳ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः, इति ॥ २ ॥ अथ परिक्रामतः'तुभ्यमग्ने पर्यवहन् सूर्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्योजायांदाग्ने प्रजया सह" इति ॥ ३ ॥ एवं द्विरपरं लाजादि ॥ ४ ॥

चतुर्थंᳫँ शूर्पकुष्ठया सर्वांल्लाजानावपति 'भगाय स्वाहा ' इति ॥ ५ ॥ त्रिः परिणीतां प्राजापत्यᳫँ हुत्वा ॥ ६ ॥ ७ ॥

भावार्थ—अब अग्निसे उत्तरकी ओर दक्षिणपगसे पत्थर पर चढ़ाता है । आरोहेम० इस मन्त्रसे । १ तदुपरान्त सरस्वति० इस मन्त्र से घर गाथा गाता है । अब तुभ्यमग्नेपर्य० इस मन्त्र से परिक्रमा करते हैं ॥ ३ ॥ ऐसे ही दोबार फिर लाजादि होम करे ॥ ४ ॥ चौथे लाज की खूंट से सब खील छोड़ता है । भगाय स्वाहा० इस मन्त्रसे तीनवार परिक्रमा करा कर प्राजापत्य होम करके ॥ ६ । ७ ॥

अथैनामुदीचीᳫँ सप्तपदानि प्रक्रामयति, एकमिषे, द्वे ऊर्जे,त्रीणि रायस्पोषाय, चत्वारि मायोभवाय, पञ्च पशुभ्यः, षड् ऋतुभ्यः, सखे सप्तपदाभव सामामनुव्रता भव ॥ १ ॥ विष्णुस्त्वा नयत्विति सर्वत्रानुषजति ॥ २ ॥ निष्क्रमणप्रभृत्युदम्भᳫँ स्कन्धे कृत्वा दक्षिणतोऽग्नेर्वाग्यतः स्थितो भवति ॥ ३ ॥ उत्तरत एकेषाम् ॥४॥ तत एनां मूर्धन्यभिषिञ्चति ' आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ' इति ॥ ५ ॥ आपो हिष्ठेति च तिसृभिः ॥ ६ ॥ अथैनाᳫँ सूर्यमुदीक्षयति 'तच्चक्षुः इति ॥ ७ ॥ अथास्यै दक्षिणाᳫँसमधि हृदय

मालभते 'मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्त-मनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्' इति ॥८॥ अथैना-मभिमन्त्रयते 'सुमङ्गलीरियं वधूरिमाᳬं समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्वा याथाऽस्तं विपरे-तन, इति ॥ ९ ॥ तां दृढपुरुष उन्मथ्य प्राग्वो-दग्वाऽनुगुप्तागारे * आनडुहे रोहिते चर्मण्युप-वेशयति 'इह गावो निषीदन्त्विहाश्वा इह पूरुषाः। इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु" इति ।१०। ग्रामवचनं च कुर्युः ।११। विवाहश्मशानयोर्ग्रामं प्रविशतादिति वचनात् ॥ १२ ॥ तस्मात् तयोर्ग्रामः प्रमाणम् इतिश्रुतेः। ॥ १३ ॥ आचार्याय वरं ददाति ॥ १४ ॥ गौर्ब्रा-ह्मणस्य वरः ॥ १५ ॥ ग्रामोराजन्यस्य ॥ १६ ॥ अश्वोवैश्यस्य ॥ १७ ॥ अधिरथᳬशतं दुहितृ-मते ॥ १८ ॥ अस्तमिते ध्रुवं दर्शयति 'ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि। मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती शंजीव शरदः शतम् इति ॥ १९ ॥ सा यदि न पश्येत् पश्यामीत्येव ब्रूयात् ॥ २० ॥ त्रिरात्रमक्षारलव-

णाशिनौ स्यातामधः शयीयाताᳫं संवत्सरं न मिथुनमुपेयातां द्वादशरात्रᳫं षड्रात्रं त्रिरात्रम-न्ततः ॥ २१ ॥ ८ ॥

भाषार्थ—अब इस कन्या को अग्नि से उत्तर की दिशा में सात पग चलाता है । एकमिषे० इत्यादि ७ मन्त्रोंसे ॥१॥ विष्णुस्त्वां नयतु०=विष्णु तुझे चलावें, यह सर्वत्र ७ सातों वार लगावे ॥२॥ क० ४ । १५ के निकलने के समय से पानी का कलश कन्धे पर धरे, अग्नि से दक्षिण की ओर मौनहो बैठा रहै ॥ ३ ॥ कोई आचार्य उत्तर में बैठना कहते हैं ॥४॥ आपः शिवा० इस मन्त्रसे इस कन्याके शिरपर छींटा लगाता है ॥ ५ ॥ आपोहिष्ठा० इन ३ मन्त्रों से भी ॥ ६ ॥ अब इसे सूर्य दिखाता है । तच्चक्षुः० इस मन्त्र से ॥७॥ फिर इस कन्या के दक्षिण कन्धे के नीचे हृदय को (वर) छूता है । मम व्रते० इत्यादि मन्त्र से ॥ ८ ॥ फिर इसे सुमंगलीरियं० इस मन्त्र को पढ़ता है ॥९॥ उस कन्या को दृढ़ पुरुष अर्थात् वर उठा कर पूर्व या उत्तर में पर्देके घरमें लेजावे । (*आनुडुह=लाल विस्तर पर बैठावे) जिस विस्तर पर लालरंग से सुन्दर बैल का चित्र बना हो ऐसे विस्तर पर बैठावे । इहगावो० यह मन्त्र पढ़े ॥१०॥ ग्राम वचन भी करे अर्थात् ग्राम की रीति नीति भी करे ॥ ११ ॥ विवाह और मृत्यु में ग्राम में प्रवेश करें इस वचन से । स्त्रियों की प्रसन्नतार्थ उन की भी रीति नीति विवाह और मृत्यु समय वर्त्ते ॥ १२ ॥ इन दोनों अव-

* नोट—आनुडुह चर्म का अर्थ पौराणिक पद्धति कार ऋषभ की त्वचा टाट का फर्श कहते हैं ॥

सरों में ग्रास का प्रमाण है यह श्रुति अर्थात् जनश्रुति है।१३ आचार्य को वर दक्षिणा देवे ॥ १३ ॥ ब्राह्मण का वर गौ दे ॥ १५ ॥ राजा का वर ग्राम दे ॥ १६ ॥ वैश्य का वर घोड़ा दे ॥ १७ ॥ रथ सहित १०० गौ कन्यापक्ष के आचार्य को देवे ॥ १८ ॥ सूर्यास्त होने पर 'ध्रुवमसि०' इस मन्त्र से ध्रुव को दिखावे ॥१९॥ तीन रात्रि तक अक्षार और नमकरहित भोजन करे ॥ २० ॥ भूमि पर सोवे, १ वर्ष स्त्री समागम न करे ॥२१॥ १२ रात्रि तक छः रात्रि तक या ३ रात्रि तक ही संग न करे॥

नवमी कण्डिका ९ (साधारण नित्य होम)

उपयमनप्रभृत्यौपासनस्य परिचरणम् ॥१॥ अस्तमितानुदितयोर्दध्नातण्डुलैरक्षतैर्वा ।२। अग्नये स्वाहा, प्रजापतये स्वाहेतिसायम् ॥३॥ सूर्याय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहेतिप्रातः ॥४॥ पुमा ँ सौ मित्रावरुणौ पुमा ँ सा वश्विनावुभौ । पुमानिन्द्रश्च सूर्यश्च पुमा ँ सं वर्तता मयि पुनः स्वाहेति पूर्वां गर्भकामा ॥ ५ ॥ ९ ॥

भावार्थ—उपयमन कुशलेकर आरम्भ कर औपासन=गृह्य अग्निपरिचर्या सेवा (कहते हैं) ॥१॥ सूर्यास्त से सूर्योदय तक (इस का समय है) दही, या चावल वा अक्षतों से (करे) ॥२॥ अग्नये स्वाहा १ प्रजापते स्वाहा २ सायं काल में ॥३॥ 'सूर्यायस्वाहा' प्रजापतये स्वाहा यह प्रातः काल ॥ ४ ॥ यदि गर्भ की इच्छा वाली स्त्री हो तो पुमा ँ सौ० इस मन्त्र से १ आहुति पहिले स्त्री देवे ॥ ५ ॥ ९ ॥

दशमी १० कण्डिका (प्रायश्चित्त)

राज्ञोऽक्षभेदे नद्धविमोक्षे यानविपर्यासेऽन्यस्यां वा व्यापत्तौ स्त्रियाश्चोद्वहने तमेवाग्नि मुपसमाधायाज्यᳬसंस्कृत्येहरति रिति जुहोति नाना मन्त्राभ्याम् ॥१॥ अन्यद्यानमुपकल्प्य तत्रोपवेशयेद्राजानᳬस्त्रियं वा प्रतिक्षत्त्र इति यज्ञान्तेनात्वाहार्षमिति चैतया ॥२॥ धुर्यौ दक्षिणा ॥३॥ प्रायश्चित्तिः ॥४॥ ततो ब्राह्मण भोजनम् ॥५॥१०॥

भावार्थः—राजा जब दौरे का आरम्भ करे या शत्रु पर चढ़ाई करे उस समय रथ का कोई भाग टूट जाय वा बन्धन जोड़ खुल जाय वा रथ लौट जाय या अन्य कोई आपत्ति आजाने पर अथवा वर स्त्रियों को विवाह करे लाता हो तब उसी गृह्याग्नि को राजा की यात्रा में सेनाग्नि को समाधान करके घृतको शुद्ध कर । इहरति० (य० ८ । १५) इत्यादि २ मन्त्रों से घृताहुति देवे और अनेक मन्त्रों से भी ॥ १ ॥ अन्य सवारी तयार कर के उस में राजा वा विवाहिता भार्या को बैठावे। प्रतिक्षत्रे० (य० २० । १०) यज्ञे तक मन्त्र से आत्वाहार्ष० यजुः १२ । ११ पाठ करे ॥ २ ॥ धोरी दो बैल दक्षिणा देवे यह प्रायश्चित्त कर्म है ॥ ४ ॥ फिर ब्राह्मणों को भोजन करावे । ५ । १० ॥

११ वीं कण्डिका (चतुर्थी कर्म)

चतुर्थ्यामपररात्रे ऽभ्यन्तरतोऽग्निमुपसमाधाय दक्षिणतो ब्रह्माणमुपवेश्योत्तरत उदपात्रं प्र-

तिष्ठाप्यस्थालीपाकꣳ श्रपयित्वा ऽऽज्यभागा-
विष्ट्वाऽऽज्याहुतीर्जुहोति ॥ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं
देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम
उपधावामि, याऽस्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै-
नाशय स्वाहा । वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां
प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधा-
वामियाऽस्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा।
सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्रा-
ह्मणस्त्वा नाथकाम उप धावामि या ऽस्यै
पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा । चन्द्र प्राय-
श्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा
नाथकाम उपधावामि या ऽस्यै गृहघ्नी तनू-
स्तामस्यै नाशय स्वाहा । गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं
देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम
उपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनू स्तामस्यै
नाशय स्वाहेति । २ । स्थालीपाकस्य जुहोति
' प्रजापतये स्वाहेति ' । ३ । हुत्वाहुत्वैतासामा-
हुतीनामुदपात्रे सꣳस्रवान्त्समवनीय तत एनां
मूर्धन्यभिषिञ्चति 'याते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशु-

घ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूर्जारघ्नीं तत एनां करोमि साजीर्य त्वं मया सह, असाविति ॥ ४ ॥ अथैनाᳯ स्थालीपाकं प्राशयति 'प्राणैस्ते प्राणान्संदधाम्यस्थिभिरस्थीनि माᳯ सैर्माᳯ सानि त्वचा त्वच मिति ।५। तस्मादेवं विच्छ्रोत्रियस्य दारेण नोपहासमिच्छेदुतह्येवं वित्परो भवति ।६। तामुदुह्य यथर्तुप्रवेशनम् ।७ यथाकामीवाकाममाविजनितोः सम्भवामेतिवचनात्।८।अथास्यैदक्षिणाᳯसमधिहृदयमालभते 'यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदःशतᳯशृणुयाम शरदः शतमिति ॥९॥ एव मत ऊर्ध्वम् ॥ १० ॥ ११ ॥

भाषार्थः—विवाह से ४ थी रात के पिछले भाग में अर्ध रात्रि के पीछे घर के भीतर अग्नि स्थापन करे दक्षिण में ब्रह्मा को आसन दे उत्तर में जल पात्र रख स्थाली पाक बना आज्यभागाहुति और आज्याहुति देता है ॥ १ ॥ अग्नि प्राय० । सूर्य प्रा० । गन्धर्व० इन मन्त्रों से आहुति देता है ॥ २ ॥ प्रजापतये स्वाहा इस मन्त्र से स्थाली पाक से होमकरता है प्रत्येकमन्त्रकी आहुति के पीछे स्रुवेके बचे घृत को जल में छोड़ता जाय और उस पात्रके जलसे निम्नमन्त्रसे वधू के शिर को अभिषेक करे ॥४ ॥ अब इस वधु को प्राणैस्ते०

मन्त्र से स्थाली पाक खुजाता है। (इस मन्त्र से पति पत्नी का एक ही अङ्ग हो जाता है) इस लिये यह जानने वाला श्रोत्रिय की स्त्री से हंसी न करे। ऐसा जानते शत्रु होजाता है ॥ ६ ॥ उस पत्नी को घर लेजा कर ऋतु ऋतु में सम्भोग करै ॥ ७ ॥ अथवा जब उस की कामना हो क्यों कि पहिले गर्भे इस कामना से सम्भोग करैं ऐसा वचन है ॥ ८ ॥ अब इस पत्नी के दक्षिण कन्धे के ऊपर हाथ कर हृदय को स्पर्श करता है "यत्तेसुसीमे" ॥ ९ ॥ यह मन्त्र पढ़े ऐसे ही इस के बाद भी जब सङ्गम हो इसी मंत्र से हृदय छुवे (१०

१२ कण्डिका (पाक्षिक यज्ञ)

पक्षादिषु स्थालीपाकꣳश्रपयित्वा दर्शपूर्णमास देवताभ्यो हुत्वा जुहोति ब्रह्मणे प्रजापतये विश्वेभ्योदेवेभ्यो द्यावापृथिवीभ्यामिति ।१। विश्वेभ्यो देवेभ्यो बलिहरणं भूतगृह्येभ्य आकाशाय च ।२। वैश्वदेवस्याग्नौ जुहोत्यग्नये स्वाहा, प्रजापतयेस्वाहा, विश्वेभ्योदेवेभ्यः स्वाहा, अग्नये स्विष्टकृते स्वाहेति प्राशनान्ते ।३। बाह्यतः स्त्री बलिꣳ हरति 'नमः स्त्रियै नमः पुꣳसे वयसे वंयसे नमः । शुक्लाय कृष्णदन्ताय पापीनां पतये नमः । ये मे प्रजामुपलोभयन्ति ग्रामे वसन्ता उतवाऽरण्ये । तेभ्यो नमोऽस्तु बलिमेभ्यो

हरामि स्वस्ति मेऽस्तु प्रजां मे ददात्विति ॥४॥ शेष मद्भिः प्रप्लाव्य ततो ब्राह्मण भोजनम् ॥५॥

भावार्थः—पक्षारम्भ दिन में १ प्रतिपदा को स्थालीपाक पकाकर दर्श पौर्णमास की देव आहुति करके ब्रह्मणे स्वाहा प्रजापतये० विश्वेभ्योदेवेभ्योः, द्यावापृथिवीभ्याम् स्वाहा, इन मन्त्रों से होम करता है ॥१॥ विश्वेदेवो, गृहभूतो आ० काश के लिये भी बलि (अन्न) देता है ॥ २ ॥ विश्वेदेव के अन्न में से अग्निमें इन मन्त्रोंसे होम करता है । अग्नये स्वाहा, प्रजापते स्वाहा, विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, अग्नये-स्विष्टकृते स्वाहा, इति यह आहुति प्राशनान्त में होती हैं (संस्रव प्राशन उस को कहते हैं जो स्रुवेका घृत जल में छोड़ते जाते हैं) उस घृत को चाटते हैं ॥ ३ ॥ अग्निशाला कि बाहर यजमान पत्नी बलि देती हुई यह मन्त्र पढ़ती है । नमः श्रियेनमपु० ॥ ४ ॥ शेष अन्न को जो हाथ से लगा हो जलमें छोड़दे फिर ब्रह्मभोज । यह दर्श पौर्णमास यज्ञ है ॥५॥

कण्डिका १३ (गर्भ धारणोपाय)

सा यदि गर्भं न दधीत सिꣳह्याः श्वेतपुष्प्या उपोष्यपुष्येण मूलमुत्थाप्य चतुर्थेऽहनि स्नातायां निशायामुदपेषं पिष्ट्वा दक्षिणस्यां नासिकाया मासिञ्चति इयमोषधी त्रायमाणा सरस्वती । अस्या अहं बृहत्याः पुत्रः पितुरिव नाम जग्र-भमिति ॥ १ ॥ १३ ॥

वह स्त्री यदि गर्भ धारण न करै तौ पुष्य नक्षत्र के दिन व्रत करके पति सिंही बूटी सुफ़ेद पुष्पवाली जड़ सहित उखाड़ लावे। जब रजस्वला होकर स्नान करे चौथे दिन की रात्रि में बूटी को पानी में पीसकर नाक के दाहिने नथने में निचोड़ दे। इयमोषधी० यह मन्त्र पढ़े॥

पुंसवन संस्कार १४ वीं कण्डिका

अथ पुंꣳसवनम्।१। पुरास्पन्दत इति मासे द्वितीये तृतीयेवा। २। यदहः पुꣳसा नक्षत्रेण चन्द्रमा युज्येत तदहरुपवास्याप्लुत्याहते वाससी परिधाप्य न्यग्रोधावरोहाञ्छुङ्गांश्च निशाया मुदपेषं पिष्ट्वा पूर्ववदा सेचनꣳ 'हिरण्यगर्भोऽद्भ्यः सम्भृतः' इत्येताभ्याम्। ३। कुशकण्टकꣳसोमाꣳशुं चैके। ४। * कूर्मपित्तं चोपस्थे कृत्वा स यदि कामयेत वीर्यवान्त्स्यादिति विकृत्यैनमभिमन्त्रयत, सुपर्णोऽसीति प्राग्विष्णु क्रमेभ्यः।५।

अब पुंसवन कर्म कहते हैं॥१॥ (स्पन्दतपुरा) हिलने से पहिले दूसरे या तीसरे महीने में॥ २॥ जिस दिन पुरुष नक्षत्र से युक्त चन्द्रमा हों उस दिन पत्नी को व्रती रख स्नान करा शुद्ध वस्त्र धारण करा कर रात्रि में बड़ के वृक्ष की जटा और कोंपलों को रात्रि में जल से पीसकर पहिलेकहे अनुसार हिरण्य गर्भ०। अद्भ्य सं० इन दो मन्त्रों से दाहिनी नासिका में निचोड़े॥ ३। कोई आचार्य बटजटा के साथ

कुशा का कांटा और सोमलता ४ वस्तु निचोड़ना कहते हैं ॥ ४ ॥ वह पुरुष चाहे कि मेरा पुत्र बलवान हो तो भार्या के उपस्थ पर * "कूर्म पित्त रखकर" विकृतिछन्द के सुपर्णोसि यजुः १२।४ इस मन्त्र से गर्भ को स्पर्श करे फिर विष्णोक्रमो सि० यजुः १२। ५ यह दो मन्त्र पढ़े ॥

१५ कण्डिका—आगे सीमन्तोन्नयन है ॥ १ ॥

अथ सीमन्तोन्नयनम् ।१। पुंसवनवत् ।२। प्रथमगर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा । ३ । तिलमुद्गमिश्र

* नोट—पुंसवन संस्कार में कूर्मपित्तको पत्नी के उपस्थ पर रखना लिखा है । हरिहरादि चारों भाष्यकारों ने इस का अर्थ पानी की भरांई लिखा है । श्री राजाराम जी ने भी यही अर्थ किया है परन्तु नोट में कछुवे का पित्ता भी लिख दिया है जो किसी कोश से नहीं मिलता । हमारी सम्मति में कछुवे का पित्ता गर्म होता है जो हानिप्रद होगा इसी लिये सब टीकाकारों ने पानी का पात्र लिख दिया है कूर्म कच्छ कच्छप एकार्थ शब्द हैं । अमरकोष में लिखा है ॥

कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोथराक्षसी ।
वनौषधिवर्ग श्लोक १२८ द्वितीय कांड

टीका—कुणिः (तुणिः) कच्छः कान्तलकः "नन्दी के वृक्षः" षट्कं नन्दि वृक्षस्य भांद रुखी इति ख्यातस्य अयं अश्वत्थाकार पत्रः ॥

पीपल के आकार का पत्ता होता है यह पता भी है ॥ २—इस वृक्ष के पत्ते की टिकिया बना कर रखना प्रतीत होता है । सम्भव है कि कच्छ पत्र के स्थान में कूर्म पित्त पाठ बन गया हो ॥

थंस्थालीपाकथंश्रपयित्वा प्रजापतेर्हुत्वा पश्चा-
दग्नेर्भद्रपीठ उपविष्टायां युग्मेन सटालुग्रप्सेनौ-
दुम्बरेणत्रिभिश्चदर्भपिञ्जूलैस्त्रेण्या शलल्या वी-
रतरशङ्कुना पूर्णचात्रेण च सीमन्तमूर्ध्वं विनयति
' भू र्भुवः स्वरिति ' । ४ । प्रतिमहाव्याहृतिवा
। ५ । त्रिवृतमाबध्नाति ' अयमूर्जावतो वृक्ष
ऊर्ज्जीव फलिनी भवेति, । ६ । अथाह वीणा-
गाथिनौ राजानथंसंगायेतां यो वाप्यन्योवीर-
तर इति । ७ । नियुक्तामप्येके गाथा मुपोदाह-
रन्ति सोम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः ।
अविमुक्तचक्र आसीरं स्तीरे तुभ्यम्, असौ, इति
यां नदी मुपावसिता भवति तस्या नाम गृह्णाति
। ८ । ततो ब्राह्मण भोजनम् । ९ ।

आगे सीमन्तोन्नयन है १ पुंसवन के समान ही है २। छठे या ८ वें मास में प्रथम गर्भ समय में ही होता है ॥ ३ ॥

तिल मूंग मिलाकर स्थाली पाक पकाकर प्रजापति की आहुति करें अग्नि के पश्चिम में कोमल आसन बिछा कर स्त्री पुरुष दोनों बैठें । २ कुशा १ सेह के कांटे जो ३ जगह सुफेद हों । या लकड़ी की कंघी डोरे से बन्धी हुई । दो गूलर के फलों का गुच्छा हाथ में लेकर ३ महाव्याहृतियों से मांग निकाले ॥ ४ ॥ अथवा ३ महाव्याहृतियों से ३ वार

मांग निकाले ॥५॥ गूलर की गुच्छी को शिर में बांधदे अय-मूर्जावतो० इस मन्त्र से ३ गांठ देवे। ६॥ पति दो वीणा गायकों को राजानं० इस मन्त्र के गान को कहै ॥७॥ कोई आचार्य " सोम एवनो राजेम० " इस मन्त्र को भी वीणा से गवाते हैं। असौ के स्थान में गर्भिणी स्त्री पासवंवर्त्ति नदी का नाम लेवे ॥ ८ ॥ फिर ब्राह्मणों को भोजन करावे ॥

१६ कण्डिका (जातकर्म विधिः)

सोष्यन्तीमद्भिरभ्युक्षति ' एजतु दशमास्यः ' इति प्राग् 'यस्यैते, इति ।१। अथावरावपतनम् ' अवैतु पृश्नि शेवलᳬशुने जरायवत्तवे । नैव माᳬसेन पीवरि न कस्मिंश्चनायतमवजरायु पद्यताम्, इति ।२। जातस्य कुमारस्याच्छिन्नायां नाड्यां मेधाजननायुष्ये करोति । ३ । अनामिकया सुवर्णान्तर्हितया मधु घृते प्राशयति घृतं वा ' भूस्त्वयि दधामि भुवस्त्वयि दधामि स्वस्त्वयिदधामि भूः भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि, इति । ४ । अथास्यायुष्यं करोति । ५ । नाभ्यां दक्षिणे वा कर्णे जपति 'अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषा ऽऽयुष्मन्तं करोमि। सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि। ब्रह्मायुष्मत्

तद्ब्राह्मणैरायुष्मत् तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । देवा आयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायुष्मन्तस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । ऋषय आयुष्मन्तस्तेव्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । यज्ञ आयुष्मान्त्स दक्षिणाभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । समुद्र आयुष्मान्त्सस्त्रवन्तीभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि, इति । ६ । त्रिस् त्रिस् 'त्र्यायुषम्' इति च । ७ । स यदि कामयेत सर्वमायुरियादितिवात्सप्रेणैनमभिमृशेत् । ८ । दिवस्परि इत्येतस्यानुवाकस्योपत्तमामृचं परिशिनष्टि । ९ । प्रतिदिशं पञ्च ब्राह्मणानवस्थाप्य ब्रूयाद् 'इममनुप्राणित' इति । १० । पूर्वो ब्रूयात् 'प्राण' इति । ११ । 'व्यान' इति दक्षिण । १२ । 'अपान' इत्यपरः । १३ । 'उदान' इत्युत्तरः । १४ । 'समान' इति पञ्चम उपरिष्टादवेक्षमाणो ब्रूयात् । १५ । स्वयं वा कुर्यादनुपरिक्राममविद्यमानेषु । १६ । स यस्मिन् देशे

जातो भवति तदभिमन्त्रयते 'वेद ते भूमिहृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्' इति। १७। अथैनमभिमृशति 'अश्मा भव परशुर्भव हिरण्य मस्तुतं भव। आत्मा वै पुत्रनामासि सजीव शरदः शतम्' इति।१८। अथाऽस्यमातर मभिमन्त्रयते 'इडाऽसि मैत्रावरुणी वीरमजीजनथाः। सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान् वीरवतोऽकरत्' इति। १९। अथास्यै दक्षिणꣳ स्तनं प्रक्षाल्य प्रयच्छति 'इमंस्तनम्' इति।२०। 'यस्ते स्तनः' इत्युत्तरमेताभ्याम्।२१। उदपात्रꣳशिरस्तो निदधाति 'आपो देवेषु जाग्रथ यथा देवेषु जाग्रथ एव मस्याꣳसूतिकायाꣳ सपुत्रिकायां जाग्रथ' इति २२। द्वारदेशे सूतिकाऽग्नि मुप समाधायोत्थानात् संधिवेलयोः फलीकरणमिश्रान् सर्षपानग्नावावपति 'शण्डामर्का उपवीरः शौण्डिकेय उलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा। आलिखन्ननिमिषः किंवदन्त उपश्रुतिः

हर्य्यक्षः कुम्भी शत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हन्त्रीमुखः सर्षपारुण श्च्यवनो नश्यता दितः स्वाहा' इति २३ । यदि कुमार उपद्रवज्जालेन प्रच्छाद्योत्तरीयेण वा पिताऽङ्क आधाय जपति 'कूर्कुरः सुकूर्कुरः कूर्कुरो बालबन्धनः । चेच्चेच्छुनक सृजनमस्ते अस्तु सीसरोलपेतापह्वर तत्सत्यम् । यत्ते देवावरमददुः सत्वं कुमार मेव वावृणीथाः । चेच्चेच्छुनकसृज नमस्ते अस्तु सीसरोलपेतापह्वर सत्सत्यं । यत्ते सरमा माता सीसरः पिता श्यामशबलौ भ्रातरौ चेच्चे च्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर, इति ।२४। अभिमृशति न नामयति न रुदति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र चाभिमृशामसि' इति ।२५।

प्रसवासन्न पत्नी को एजतु दशमास्यः यजुः० ८ । २८ इस मन्त्र से यस्यैते० ८ । २९ तक २ मन्त्रों को पढ़कर जलका छींटा देवे । बालक के भूमि पर आने पर अश्वेतु पृश्नि० यह मन्त्र पढ़े ।।

जन्म के पीछे नाल छेदन करा कर मेधा जनन आयुष्य बुद्धि प्रद आयुप्रद क्रिया करे ॥ ३ ॥ यथा—सुवर्णयुक्त अनामिका अङ्गुली से घृत शहत चटावे या केवल घृत इस मन्त्र से चटावे । भूः त्वयि दधामि । भुवः त्वयिद० । स्वः त्वयिद० ४ फिर आयुष्य करता है ॥ ५ ॥ नाभि या दक्षिण कान मे. अग्नि आयुष्मान्० । सोम आयु० । ब्रह्मा आयु० । देवा० । ऋषयः

आ० । पितर० । यज्ञ आ० । समुद्र आयु० । इन मन्त्रों का पाठ करता है । ६ ॥ आयुष० यजुः-३ । ६२ इस मन्त्र से तीन वार आयुष्य आशीर्वाद करता है ॥ ७ ॥ पिता यदि पुत्र की सर्वायु चाहे तौ (यजु० १२ । १८ से २८ तक मन्त्र) वात्सप्र अनुवाक ८ का पाठ करै ॥ ८ ॥ दिवस्परि प्रथमं० इस मन्त्र से आरम्भ कर इस अनुवाक की अन्त की ऋचा छः इदे (शेष ११ मन्त्र पढ़े) ॥ ९ ॥ प्रत्येक दिशा में ५ ब्राह्मण बैठावें (१ पूर्व २ दक्षिण ३ पश्चिम ४ उत्तर ५ मध्य) यजमान उन से आशीर्वाद की प्रार्थना करै ॥१०॥ पूर्व का कहे "प्राण" ११ दक्षिण का " व्यान " १२ । पश्चिम का " अपान " १३ । उत्तर का "उदान" १४ । मध्य का ऊपर को देखकर "समान" ऐसा कहै ॥१५॥ ब्राह्मण न हों तौ चारों ओर घूमता हुवा स्वयं पिता ही इन उक्त शब्दों को कहै ॥१६॥ जिस भूमि पर जन्म लिया उस भूभाग को स्पर्श कर पढ़ें " वेदते० " इस मन्त्र को पढ़ता है १७ ॥ फिर इस बालक को छूकर " अश्माभव० " इस मन्त्र को पढ़ता है १८ ॥ फिर इस की बालक की माता को छूकर इडासि० यह मन्त्र पढ़ता है । १९ ॥ फिर उस की दक्षिणदूधी को धोकर और "इमंस्तनम्०" य० १७ । ८७ मन्त्र पढ़कर बालक को देवे ॥२०॥ यस्ते स्तनः० (वृहदा० ६ । ४ । २७) इस मन्त्र से बायां स्तन धोकर पिलाने को दे । इन दो मन्त्रों से दोनों स्तन धोकर पिलावे २१ ॥ पानी का पात्र शिरहाने रखता हुवा " आपोदेवेषु० " यह मन्त्र पढ़े ॥ २२ ॥ सूतिकागृह के द्वार पर सूतिकाग्नि का स्थापन कर जब तक प्रसूता न उठे नित्यप्रति दोनों

समय वहां "षंडामर्का:०" इन २ मन्त्रों से सरसों फलीकरण * मिलाकर होम करता है ॥ २३ ॥

यदि बालक रोगी हो तो पिता गोदी में बैठाकर जाली वा दुपट्टे से ढक कर " कुर्कुर:० इस मन्त्र को जपे ॥ २४ ॥ फिर " त्वनामयति०" इस मन्त्र से स्पर्श करे ॥ २५ ॥ १६

१७ कण्डिका

दशम्यामुत्थाप्य ब्राह्मणान् भोजयित्वा पिता नाम करोति । १ । द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा घोषवदाद्यन्तरन्तस्थं दीर्घाभिनिष्ठानं कृतं कुर्यान्न तद्धितम् । २ । अयुजाक्षर माकारान्तᳪ स्त्रियै तद्धितम् । ३ । शर्म ब्राह्मणस्य वर्मक्षत्रियस्य

नोट—" फलीकरणमिश्रान्सर्षपान् जुहो० " यहां फलीकरण का अर्थ 'कर्क, गदाधर, हरिहर, जयराम के संस्कृत भाष्यों और तदनुसार ही श्री राजाराम जी के भाष्य में भी तंडुल कण=चावल की किनकी में सरसों मिला कर ही होम लिखा है परन्तु हम को फलीकरण का अर्थ चावल कण कहीं कोष में या व्युत्पत्ति द्वारा ठीक प्रतीत नहीं हुवा। तब कोष देखे ऐसे ज्ञात हुवा कि फली नाम अमरकोष के वनौषधिवर्ग कांड २ के श्लोक ५५ में प्रियंगुलता का है ॥

कृष्णवृन्ता कुवेराक्षी— " श्यामा तु महिला ह्वया ।
लता गोवन्दिनी गुंद्रा–प्रियंगुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥
विष्वक्सेना गंधफली कारम्भा प्रियकृश्चला " ॥
श्यामा से प्रियङ्गुतक १२ नाम प्रियंगु के हैं ॥

गुप्तेति वैश्यस्य ।४। चतुर्थे मासि निष्क्रमणिका ।५। सूर्यमुदीक्षयति 'तच्चक्षुः' इति । ६ । १७ ।

दशवें दिन प्रसूता को उठाकर ब्रह्मभोज कराकर पिता नाम धरे ।१। नाम २ या ४ अक्षर का हो घोष * अक्षर आदि में हो, मध्य में अन्तस्थ हो, अन्त में दीर्घ वा विसर्ग हो कृत् प्रत्ययान्त हो। तद्धितान्त न हो ॥ २ ॥ विषमाक्षर आकारन्त तद्धितान्त कन्या का नाम हो ॥ ३ ॥ शर्मा ब्राह्मण, वर्मा क्षत्रिय, गुप्त वैश्य के (नामान्तमेंहो) ॥४॥ चौथे मास निष्क्रमण होता है ॥ ५ ॥ " तच्चक्षुः० यजुः ३६ । २४ " मन्त्रसूर्य को दिखाता है ॥ ६ ॥ १७

१८ कण्डिका

प्रोष्येत्य गृहानुपतिष्ठते पूर्ववत् ।१। पुत्रं दृष्ट्वा जपति—'अङ्गादङ्गात् सम्भवसि हृदयादधि जायसे । आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतमिति । २ । अथाऽस्यमूर्द्धानमवजिघ्रति 'प्रजापतेष्ट्वा हिङ्कारेणावजिघ्रामि सहस्रायुषाऽसौ-जीव शरदः शतम्, इति ।३। गवां त्वा हिङ्कारेणेति चेतिदक्षिणेऽस्य कर्णे जपति 'अस्मे प्रयन्धि मघवन्नृजीषिन्निन्द्र रायो विश्ववारस्य भूरेः। अस्मे शतꣳशरदो जीवसे धा अस्मे वीरां

* घोषाक्षर—ग घ ङ । ज झ ञ । ड ढ ण, द ध न, ब भ म
† य र ल व अन्तस्थ

ऽच्छम्वत इन्द्र शिप्रिन्, इति ।४। इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे । पोषᳬ रयीणामरिष्टिं तनूनाᳬस्वाद्मानं वाचः सुदिनत्व मह्नाम्, इति सव्ये । ५ । स्त्रियैतु मूर्द्धानमेवाभिजिघ्रति तूष्णीम् । ६ ।१८

विदेशसे घर आता है १ पूर्ववत् ग्रास करता है पुत्रको देखकर जपता है " अङ्गा दङ्गा० यह मन्त्र शतपथ ॥२॥ फिर इस पुत्र के शिर को सूंघता है " प्रजापते० " मन्त्र से ॥ ३ ॥ गवांत्वा० यह मन्त्र पुत्र के दक्षिण कान में जपता है । ४ । इन्द्रम् श्रेष्ठा० यह मन्त्र बांये कान में (जपे) ॥ ५ ॥ कन्याओं के शिर को ही चुपके सूंघले ॥ ६ ॥ १८ ॥

१९ वीं कण्डिका

षष्ठे मासेऽन्नप्राशनम् । १ । स्थालीपाकᳬ श्रपयित्वाऽऽज्यभागा विष्ट्वाऽऽज्याहुती जुहोति देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति । सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वाग-स्मानुप सुष्टु तैतुस्वाहा, इति । २ । 'वाजो नो अद्य' इति च द्वितीयाम् । ३ । स्थालीपाकस्य जुहोति ' प्राणेनान्नमशीय स्वाहा, अपानेन गन्धानशीय स्वाहा, चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा, श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा, इति । ४ । प्राश-

नान्ते सर्वान् रसान्त्सर्वमन्नमेकत उद्धृत्याथैनं प्राशयेत् । ५ । तूष्णीं ॐ हन्तेति वा ' हन्तकारं मनुष्या' इति श्रुतेः । ६ । भारद्वाज्या माᳫंसेन वाक्प्रसारकामस्य । ७ । कपिञ्जलमाᳫंसेनान्नाद्यकामस्य । ८ । मत्स्यैर्जवनकामस्य । ९ । कृकषाया आयुष्कामस्य । १० । आट्या ब्रह्मवर्चसकामस्य । ११ । सर्वैः सर्वकामस्य । १२ । अन्नपर्यायवा ततो ब्राह्मणभोजनमन्नपर्यायवा ततो ब्राह्मणभोजनम् । १३ । १९॥

छठे मास में "अन्नप्राशन" अन्नचटाना होता है ॥ १ ॥ स्थालीपाक पकाकर आज्य भागाहुति देकर " देवी वा० " इस मन्त्र से आहुति दे ॥ २ ॥ वाजो नो अघ इस मन्त्र से दूसरी ॥ ३ ॥ स्थालीपाक से होम करता है " प्राणेनान्नम् अशीय" स्वाहा । अपानेन गंधं० । चक्षुषा रूपा० । श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा" इन मन्त्रों से आहुति देवे । ४ । संस्रव प्राशन के पीछे सब रसों को सब अन्नों को एकत्र करे और बालक को चटावे ॥ ५ ॥ चुप होकर चटावे वा " हन्त " कह कर । क्योंकि "हन्तकारम् मनुष्याः" यह श्रुति है ॥ ६ ॥ ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १२ सूत्र प्रक्षिप्त प्रतीत होते हैं । क्योंकि सबरसों को सब अन्नों को चटा चुकने के पीछे मांस चटाने में क्या रस नमक आदि नहीं हैं ? अन्न परोसकर ब्राह्मण को भोजन करावे ॥१३॥

प्रथम काण्ड समाप्त

अथ द्वितीय कांडे प्रथमा कंडिका

सांवत्सरिकस्य चूडाकरणम् । १ । तृतीये वाऽप्रतिहते । २ । षोडशवर्षस्य केशान्तः । ३ । यथामंगलं वा सर्वेषाम् । ४ । ब्राह्मणान् भोजयित्वा माता कुमारमादायाप्लाव्याहते वाससी परिधाप्याङ्क आधाय पश्चादग्नेरुपविशति । ५ । अन्वारब्ध आज्याहुतीर्हुत्वा प्राशनान्ते शीतास्वप्सूष्णा आसिञ्चति 'उष्णेन वाय उदकेनेह्यदिते केशान् वप' इति । ६ । केशश्मश्रुसि च केशान्ते । ७ । अथात्र नवनीतपिण्डं घृतपिण्डं दध्नो वा प्रास्यति । ८ । तत आदाय दक्षिणं गोदानमुन्दति 'सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनुं दीर्घायुत्वाय वर्चसे' इति । ९ । त्रेण्या शलल्या विनीय त्रीणि कुशतरुणान्यन्तर्दधाति 'ओषध' इति । १० । 'शिवोनाम' इति लोहक्षुर मादाय 'निवर्तयामि' इति प्रवपति 'येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्यराज्ञो वरुणस्य विद्वान् तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथाऽसद्' इति । ११ । सकेशानि प्रच्छिद्यानडुहे गोमये

पिण्डे प्रास्यत्युत्तरतोऽग्नियस्याणे।१२। एवं द्विर-परं तूष्णीम् । १३ । इतरयोश्चोन्दनादि । १४ । अथपश्चात् ' त्र्यायुषम् ' इति । १५ । अथो-त्तरतः 'येन भूरिश्चरादिवं ज्योक् च पश्यामि सूर्यम् । तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्यायस्वस्तये' इति ॥ ६ ॥ त्रिः क्षुरेण शिरः प्रदक्षिणं परिहरति ॥ १७ ॥ संमुखं केशान्ते ।१८। यत्क्षुरेण मज्जयता सुपे-शसा वप्ता वपति केशान् छिन्धि शिरोमाऽस्यायुः प्रमोषीः । १९ । मुखमिति च केशान्ते । २० । ताभिरद्भिः शिर समुद्य नापिताय क्षुरं प्रय-च्छति ' अक्षण्वन् परिवप' इति । २१ । यथा मङ्गलं केशशेषकरणम् ।२२। अनुगुप्तमेतꣳसकेशं गोमयपिण्डं निधाय गोष्ठे पल्वल उदकान्ते वाऽऽचार्याय वरं ददाति । २३। गांकेशान्ते ।२४। संवत्सरं ब्रह्मचर्यमवपनं च केशान्ते द्वादशरात्र ꣳषड्रात्रं त्रिरात्रमन्ततः । २५ । १ ॥

चूडाकरण १ वर्ष के बालक का होता है ॥१॥ या तीसरे वर्ष की समाप्ति से पूर्व । २ । १६ वर्ष के बालक का केशान्त होता है अथवा कुलाचारानुसार जिस वर्ष में होता हो वा

अथ अनुकूल हो तब ही मल केश कर्त्तनकरावें ॥४॥ ब्राह्मण जिमाकर माता बालक को लेकर स्नान करा नवीन दो वस्त्र पहिनाकर गोद में ले अग्नि के पश्चिम भाग में बैठे ॥५॥ पिता ब्रह्मा से अन्वारब्धकन्धा छूकर आज्याहुति से प्राशन पर्य्यन्त सब कर्म करे । उष्णेनवा० इस मन्त्र से ठंडे जल में गरम जल मिलावे केशान्त संस्कार में केशश्मश्रु कहे ॥ ७ ॥ फिर पानी में मक्खन वा घृत वा दही डाले ॥८॥ उस जल में से चुल्लुभर कर दहिनी कनपटी पर बालों को सवित्रा प्रसूतेन, इस मन्त्र से गीला करे ॥९॥३ सेह के कांटे ३ कुशा लेकर बालों को "ओषधे त्रायस्व० यजुः० ४ । १ इस मन्त्र से बाल ढांपे ॥ १० ॥ शिवोनामासि०य० ३ । ६३ इस पद से लोहे का उस्तरा लेकर " निवर्त्तयाम्यायुषे ३ । ६३ इस मन्त्र से केशकाटने आरम्भ करे । येनावपत० मन्त्र को पढ़ता हुवा काटे । ११ । कुश सहित केश काटकर अनुडुहवृष के गोबर पिंडको उत्तर में धरकर उस में बालों को रखताजाय ॥१२॥ इसी प्रकार और दो वार चुप के से काटे ॥१३॥ अन्य दोनों ओर के बालों को भिगोनादि कार्य तो मन्त्र पूर्वक करे ॥ १४ ॥ तत्पश्चात् त्र्यायुषं० इस मन्त्र को पढ़े ॥ १५ ॥ येनभूरि:० इस यजुः ३ । ३६ से बांये भाग के बाल कोटे ॥१६॥ तीन वार शिरके चारों ओर प्रदक्षिणक्रम उस्तरा से घुमावे १७ केशान्त संस्कार में मुख के दाढ़ी मूछ भी मूंडे ॥ १८ ॥ यत्क्षुरेण० यह मन्त्र मुंडन का है ॥ १९ ॥ मुख के बाल केशान्त में जब मूंडे ॥२०॥ पूर्वोक्त प्रकार शीतल और उष्णो दकों से शिर को भिगो कर नाई को उस्तरा देता है । अक्षु० खून न निकले ऐसा मूंडो" इस मन्त्र से ॥ २१ ॥ यथा

योग्य कुलदेशाचारानुसार केश कटावे ॥ २२ ॥ शिखा कहीं छूटती है। सब केशों को बीन कर गोबर सहित लपेट कर गोशाला पोखर या नदी में गाढ़ देवे आचार्य को भेंट दे। ॥ २३ ॥ केशान्त संस्कार में गोदान दे। २४ ॥

चूड़ा कर्म संस्कार के पीछे १ वर्ष तक बाल न मुड़ावे ब्रह्मचर्य व्रत रहे। और केशान्त के पीछे १२ वा ६ वा ३ रात्रि तक क्षौर न करावे ॥ २५ ॥

इति द्वितीय काण्डे प्रथमा कण्डिका।

कण्डिका २ (उपनयन)

अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयेद् गर्भाष्टमे वा ।१। एकादशवर्षꣳराजन्यम् । २ । द्वादशवर्षं वैश्यम् ३ । यथामङ्गलं वा सर्वेषाम् ।४। ब्राह्मणान् भोजयेत् तं च पर्युप्तशिरसमलङ्कृतमानयन्ति ।५। पश्चादग्नेरवस्थाप्य " ब्रह्मचर्यमागाम् " इति वाचयति "ब्रह्मचार्यसानि" इति च ।६। अथैनं वासः परिधापयति " येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम् । तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे " इति ।७। मेखलां बध्नीते "इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती म आगात् । प्राणापानाभ्यां बल मादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम्, इति ।८।

"युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः" इति वा।९। तूष्णीं वा। १०। (यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-र्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः। यज्ञोप-वीत मसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपन-ह्यामि" इति। अथाजिनं प्रयच्छति "मि-त्रस्य चक्षुर्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वि स्थविरꣳ समिद्धम्। अनाहनस्यं वसनं जरिष्णुः परीदं वाज्यजिनं दधेऽहम्" इति दण्डं प्रयच्छति।११। तं प्रतिगृह्णाति "यो मे दण्डः परापतद्वैहायसो-ऽधि भूम्याम्। तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय" इति।१२।दीक्षावदेके 'दीर्घसत्र मुपैति, इति वचनात्। १३। अथाऽस्याद्भिरञ्ज-लिनाऽञ्जलिं पूरयति 'आपोहिष्ठा' इति तिसृभिः। १४। अथैनꣳ सूर्यमुदीक्षयति 'तच्चक्षुः' इति। १५। अथास्य दक्षिणाꣳसमधि हृदयमालभते 'ममव्रते ते हृदयं दधामि ममचित्तमनुचित्तं

ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्, इति ।१६। अथाऽस्य दक्षिणꣳहस्तं गृहीत्वाऽऽह 'कोनामाऽसि, इति ।१७। असौ 'अहं भोः३, इति प्राह ।१८। अथैन माह 'कस्य ब्रह्मचार्यसि, इति ।१९। 'भवतः, इत्युच्यमाने 'इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्य स्तवासौ, इति ।२०। अथैनं भूतेभ्यः परिददाति 'प्रजापतये त्वा परिददामि देवाय त्वा सवित्रे परिददाम्यद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि द्यावा पृथिवीभ्यां त्वा परिददामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै, इति ।२१।

कण्डिका २

आठ वर्ष के ब्राह्मण का यज्ञोपवीत करावे या गर्भ से आठवें वर्ष में ॥१॥ ११ वर्ष के क्षत्रिय को ।२॥ १२ वर्ष के वैश्य को ।३। या जैसा कुलाचार हो वैसा सब का ।४। ब्राह्मणों को भोजन करावे और बालक का शिर मुंडा कर मंडप में लावे ॥५॥ अग्नि के पश्चिम भाग में बैठा कर "ब्रह्मचर्यमागाम्" ऐसा और "ब्रह्मचर्यसानि" कहवावे, कहावे ॥६॥ "येनेन्द्रायबृ०" इस मन्त्र से बालक को वस्त्र पहिनावे ॥७॥ "इयंदुरुक्त" मन्त्र से मेखला तगड़ी बांधे ॥८॥ अथवा "युवा-

सुवासा० ” इस मन्त्र से ॥ ९ ॥ या चुप के ही बांधे ॥ १० ॥ (यज्ञोपवीतम्० इस मन्त्र से यज्ञोपवीत पहिनावे) फिर मृगचर्म देता यह मन्त्र पढ़े “ मित्रस्य चक्षुः० ” दंड देता है ॥ ११ ॥ उस दंड को लेता हुवा यह मन्त्र पढ़े “योमेदंडः०„ ॥ १२ ॥ कोई आचार्य दीक्षा के समान दंड को “दीर्घसत्र-को प्राप्त होता है” कह कर दंड को देते हैं । १३ । फिर इस ब्रह्मचारी की अञ्जली को आचार्य अपनी अञ्जली से भरता है । आपोहिष्ठा० इन ३ तीन मन्त्रों से ॥ ॥१४॥

तच्चक्षुः इस मन्त्र से पुनः इस को सूर्य दिखाता है ।१५। फिर इस का दक्षिण हृदय छूता है । “ममव्रते” इस मन्त्र से ।१६। फिर इस का दक्षिण हाथ पकड़ कर आचार्य कहे को नामासि ।१७। शिष्य अपना नाम लेकर अहंभोः ३ ऐसे कहे ।१८। फिर इससे कहे "कस्यब्रह्मचार्यसि” ऐसे ।१९। ‘भवतः’ ऐसे शिष्य कहे । ऐसा कहने पर “इन्द्रस्य ब्रह्म०„ यह मंत्र पढ़े । २० । फिर इसे पोषण करता है । “ प्रजापतये० ” इस मन्त्र से ॥ २१ ॥

कण्डिका ३

प्रदक्षिणमग्निंपरीत्योपविशति । १ । अन्वारब्ध आज्याहुतीर्हुत्वा प्राशनान्तेऽथैनᳬ संशास्ति ‘ ब्रह्मचार्यस्यपोऽशान कर्म कुरु मा दिवा सुषुप्था वाचं यच्छसमिधमाधेह्यपोऽशान, इति । २ । अथास्मै सावित्रीमन्वाहोत्तरतोऽग्नेः

प्रत्यङ्मुखायोपविष्टायोपसन्नाय समीक्षमाणाय समीक्षिताय । ३ । दक्षिणतस्तिष्ठत आसीनाय वैके ।४। पच्छोऽर्द्धर्चशः सर्वाञ्च तृतीयेन सहानुवर्तयन् ।५। संवत्सरे षाण्मास्ये चतुर्विंशत्यहे-द्वादशाहे षडहे त्र्यहे वा ।६। सद्यस्त्वेव गायत्रीं ब्राह्मणायानुब्रूयात् 'आग्नेयो वै ब्राह्मणः' इति श्रुतेः । ७ । त्रिष्टुभꣳराजन्यस्य । ८ । जगतीं वैश्यस्य । ९ सर्वेषां वा गायत्रीम् ।१०।

ब्रह्मचारी अग्नि की परिक्रमा कर के बैठता है ॥१॥ ब्रह्मा से छूकर आचार्य होम कर प्राशन कराकर उपदेश देवे कि तू ब्रह्मचारी है । आचमन कर सन्ध्यादि नित्य कर्म कर । दिन में मत सो । वाणी को सम्भाल । अग्निहोत्र कर । भोजन से पूर्व आचमन कर । ऐसे ।२। फिर इस के लिये गायत्री देवे । अग्नि से उत्तर में पूर्वाभिमुख आचार्य के पास बैठा आचार्य को देखता हो आचार्य ब्रह्मचारी को देखता हो । ३ । अग्नि से दक्षिण में स्थित वा बैठे को उपदेश करे कोई ऐसा मानते हैं । ४ । प्रथम वार गायत्री का एक पाद । दूसरी वार दोपाद । तीसरी वार समस्त गायत्री को साथ २ बुलवावे ॥५॥ यज्ञोपवीत से १ वर्ष ६ मास, २४ दिन १२।६ वा ३ दिन पीछे उपदेश करे ॥६॥ जल्दी ही उसी दिन गायत्री ब्राह्मण को पढ़ावे क्यों कि "ब्राह्मण-अग्नि प्रधान है, ऐसी श्रुति है ॥ ७॥ त्रिष्टुप् क्षत्रिय का। ८। जगती वैश्य का ।९। या सब का गायत्री ही (मन्त्र है) ॥१०॥

कण्डिका ४

अथ समिदाधानम् । १ । पाणिनाऽग्निं परिसमूहति 'अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु। यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा अस्येवं माᳬसुश्रवः सौश्रवसं कुरु । यथात्वमग्ने देवानांयज्ञस्य निधिपा अस्येवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपोभूयासम्, इति । २ । प्रदक्षिणमग्निंपर्युक्ष्योत्तिष्ठन्त्समिधमादधाति 'अग्नये समिधमाहार्षं बृहतेजातवेदसे । यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्योमेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयासᳬ स्वाहा, इति । ३। एवं द्वितीयां तथा तृतीयाम् । ४ । एषा त इति वा समुच्चयो वा । ५ । पूर्ववत् परिसमूहनपर्युक्षणे । ६ । पाणी प्रतप्य मुखं विमृष्टे 'तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि, अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण । ७ । मेधां मे

देवः सविता मेधां देवी सरस्वती । मेधामश्विना देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ, इति । ८ ।

यहां समिधा अग्नि में छोड़ता है । १ । ब्रह्मचारीहाथ से अग्नि को (स्रुवे से) समेटता है । "अग्ने सुश्रव०" इत्यादि मन्त्रों से ॥२॥ अग्नि के चारों ओर जल छिड़क कर खड़ा होकर समिधा धरता है । "अग्नये समि०" इस मन्त्र से । ३ । ऐसे ही दूसरी तथा तीसरी समिद् भी (लगावे) । ४ । वा "एषाते" यजु० २ । १४ । इस मन्त्र से या एक ही वार तीनों समिधा लगावे ॥ ५ ॥ प्रथम कहे अनुसार अग्नि को समेटे और चारों ओर जल छिड़के ॥६॥ "तनूपा अग्ने०" ॥ ७ ॥ "मेधांमेंदेवः" ॥ ८ ॥ इन दोनों मन्त्रों से दानों हाथ तपाकर मुख से लगावे ॥

कण्डिका ५

अत्र भिक्षाचर्यचरणम् ।१। भवत्पूर्वां ब्राह्मणो भिक्षेत ।२। भवन्मध्याᳬराजन्यः ।३। भवदन्त्यां वैश्यः । ४ । तिस्रोऽप्रत्याख्यायिन्यः ।५। षड् द्वादशाऽपरिमिता वा ।६। मातरं प्रथमामेके । ७। आचार्याय भैक्षं निवेदयित्वा वाग्यतोऽहः शेषं तिष्ठेदित्येके । ८ । अहिᳬसन्नरण्यात् समिधआहृत्य तस्मिन्नग्नौ पूर्ववदाधाय वाचं विसृजते । ९ । अधः शाय्यक्षारल-

क्षणाशी स्यात्।१० दण्डधारणमग्निपरिचरणं गुरुसुश्रूषा भिक्षाचर्या। ११। मधुमांᳪसमज्ज नोपर्यासन स्त्रीगमनानृतादत्तादानानि वर्जयेत् ।१२। अष्टाचत्वारिᳪशद्‌ वर्षाणि वेद ब्रह्मचर्यं चरेत्। १३। द्वादश द्वादश वा प्रतिवेदम् ।१४। यावद्ग्रहणं वा। १५। वासाᳪसि शाणक्षौमाविकानि। १६। ऐणेयमजिनमुत्तरीयं ब्राह्मणस्य। १७। रौरवᳪराजन्यस्य।१८। आजं गव्यं वा वैश्यस्य ।१९। सर्वेषां गव्यमसति प्रधानत्वात् ।२०। मौञ्जी रशना ब्राह्मणस्य ।२१। धनुर्ज्या राजन्यस्य। २२। मौर्वी वैश्यस्य। २३। मुञ्जाभावे कुशाश्मन्तकबल्वजानाम्। २४। पालाशो ब्राह्मणस्य दण्डः। २५। बैल्वो राजन्यस्य। २६। औदुम्बरो वैश्यस्य। २७। सर्वे वा सर्वेषाम्। २८। आचार्येणाहूत उत्थाय प्रतिशृणुयात्। २९। शयानं चेदासीन आसीनं चेत् तिष्ठंस्तिष्ठन्तं चेदभिक्रामन्नभिक्रामन्तं चेदभिधावन्। ३०। स एवं वर्तमानोऽमुत्राऽ वसत्यमुत्राद्य वसतीति तस्य स्नातकस्य

कीर्तिर्भवति । ३१ । त्रयः स्नातका भवन्ति विद्यास्नातको व्रतस्नातको विद्याव्रतस्नातक इति । ३२ । समाप्यवेदमसमाप्य व्रतं यः समावर्तते स विद्यास्नातकः । ३३ । समाप्यव्रतमसमाप्य वेदं यः समावर्तते स व्रतस्नातकः ।३४। उभयꣳसमाप्य यः समावर्तते स विद्याव्रतस्नातक इति । ३५ । आषोडशाद् वर्षाद् ब्राह्मणस्यानतीतः कालो भवतीति । ३६ । आद्वाविꣳशाद् राजन्यस्य । ३७ । आचतुर्विꣳशाद्वैश्यस्य । ३८ । अत ऊर्ध्वं पतितसावित्रीका भवन्ति । ३९ । नैनानुपनयेयुर्नाध्यापयेयुर्न याजयेयुर्न चैभिर्व्यवहरेयुः । ४० । कालातिक्रमे नियतवत् । ४१ । त्रिपुरुषं पतितसावित्रीकाणामपत्येऽसंस्कारो नाध्यापनं च । ४२ । तेषाꣳसंस्कारेप्सुर्व्रात्यस्तोमेनेष्ट्वा काममधीयीरन् व्यवहार्या भवन्तीति वचनात् ॥ ४३ ॥

यहां भिक्षा के आचार का कथन है ॥ १ ॥ भवत् शब्द प्रथम बोलकर ब्राह्मण भिक्षा मांगे । २ । भवत् मध्य कहे क्षत्रिय । ३ । भवत् अन्त में कहे वैश्य । ४ । यथा-आप भिक्षा दीजिये ब्राह्मण । भिक्षा आप दीजिये, क्षत्रिय । भिक्षा दी-

जिये महाराज। ऐसे वैश्य मांगे। (पूर्वदिन) ऐसी तीन स्त्रियों से मांगे जो नकार न करें।५। छः या १२ से मांगे। ६। कोई आचार्य प्रथम माता से मांगे ऐसा कहते हैं ।७। आचार्य के सामने भिक्षा लाई भेटकर चुपचाप शेषदिन खड़ा रहे। यह किन्ही का मत है। ८। हरे वृक्षों को न काट कर (अहिंसासे) समिधा लावे। अग्नि में छोड़े वाणी को बोले मन्त्र पढ़े। ९। भूमि पर सोवे, क्षार लवण न खावे। १०। दण्ड रक्खे, अग्नि सेवा"गुरुशुश्रूषा"भिक्षाचर्याकरे ।११। भिक्षा में शहद और मांस नले (अर्थात् मांसाहारी जनों के घर से भिक्षा न ले) बहुत स्नान, ऊंचे पर बैठना स्त्रियों का संग मिथ्याभाषण, बिना दी हुई वस्तु लेना, यहवर्जित है ।१२। ४८ वर्ष तक वेदपढ़े ब्रह्मचर्य करे ।१३। १२।१२ वर्ष एक२ वेद पढ़े ।१४। याजवतक पढ़ सके ।१५। वस्त्र सण, रेशम या ऊन के हों ।१६। ऐणेय छाल ब्राह्मण को ।१७। रुरु कीक्षत्रिय को ।१८। अज वागो* की वैश्य को ।१९। उक्त छाल न होंतो सब गौकी ही रक्खें क्योंकि गौ प्रधान है ।२०। मूंज की तगड़ी ब्राह्मण की ।२१। क्षत्रिय की धनुष के ज्या डोरे की ।२२। वैश्योंको माले के वक्कल की ।२३। मूंज न होंतो कुशा बल्वज की बनावे ।२४। ढाक का दंड ब्राह्मण का ।२५। वेल का क्षत्रिय का ।२६। गूलर का वैश्य का। २७। या सब दंड सब के। २८। आचार्य के बुलाने पर उठकर सुने। २९। सोता हो तो बैठ कर। बैठे हों तो खड़े होकर। खड़े हों तो कुछ चलकर। चलते हों तो दौड़कर ।३०।

*इन ब्रह्मचारियों के ओढ़ने के वस्त्र पर उक्त चित्र बने हों जिससे ब्रह्मचारी के वस्त्र पर निशान मार्के समझे जावें (संपादक).

छात्र ऐसे रहता है यदि स्नातक ऐसे न रहे तो अपयश होता है । ३१ । तीन प्रकार के स्नातक होते हैं । विद्या स्नातक, व्रतस्नातक, विद्या व्रतस्नातक । ३२ । वेद समाप्त करके व्रतसमाप्त न करके वर्त्ते वह विद्यास्नातक है । ३३ । व्रतसमाप्त कर वेद समाप्त न करके वर्त्ते वह व्रतस्नातक है ।३४। वेद और व्रत दोनों को समाप्त करे वह विद्याव्रत स्नातक है ।३५। ब्राह्मण का १६ वर्ष तक अनतीतकाल होता है । ३६ । क्षत्रिय का २२ वर्ष तक ।३७। वैश्य का २४ तक ।३८। इस के बाद सावित्री से पतित हो जाते हैं । ३९ । न इन्हें यज्ञोपवीत दे न वेद पढ़ावे न यज्ञ करावे न इन से व्यवहार करे । ४० । समय बीतने पर श्रौत सूत्र में नियत किये अनादिष्ट प्रायश्चित्त करे ।४१। जिन के ३ पीढ़ी तक सावित्री पतित हो जावें उन की सन्तान को न पढ़ावे । ४२ । वह यदि संस्कार चाहें तो व्रात्यस्तोम इष्टि करें तो भले ही पढ़ें व्यवहार योग्य होते हैं ऐसा वचन है ॥ ४३ ॥

कण्डिका ६ (समावर्त्तन संस्कार)

वेदꣳसमाप्य स्नायात् । १ । ब्रह्मचर्यं वाऽष्टाचत्वारिꣳशकम् । २ । द्वादशकेऽप्येके । ३ । गुरुणानुज्ञातः । ४ । विधिर्विधेयस्तर्कश्चवेदः । ५ । षडङ्गमेके । ६ । न कल्पमात्रे । ७ । कामन्तु याज्ञिकस्य । ८ । उपसंगृह्य गुरुꣳसमिधोऽभ्याधाय परिश्रितस्योत्तरतः कुशेषु प्रागग्रेषु पुरस्तात् स्थित्वाऽष्टानामुदकुम्भानाम्

। ९ । ये अप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूखो मनोहाऽस्खलो विरुजस्तनूदूषिरिन्द्रियहा अति तान्सृजामि । यो रोचनस्तमिह गृह्णामि इत्येकस्मादपो गृहीत्वा । १० । तेनाभिषिञ्चते तेन 'मामभिषिञ्चामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय' इति । ११ । 'येन श्रियमकृणुतां येनावमृशतां सुराम् । येनाक्ष्यावभ्यषिञ्चतां यद्वां तदश्विना यशः' इति । १२ । 'आपो हि ष्ठा' इति च प्रत्यृचम् । १३ । त्रिभिस्तूष्णीमितरैः । १४ । उदुत्तममिति मेखलामुन्मुच्य दण्डं निधाय वासोऽन्यत्परिधायादित्यमुपतिष्ठते । १५ । उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्थाद्द दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वाविदन्मागमय ॥ उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद्द दिवायावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं मा कुर्वाविदन्मागमय । उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् सायंयावभिरस्थात् सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमय, इति । । १६ । दधि तिलान्वा प्राश्य जटालोमनखानि सꣳहृत्यौदुम्बरेण दन्तान् धावेत [illegible]

त्यू इष्व४ंसोमोराजायमागमत् । स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च, इति । १७ । उत्सादा पुनः स्नात्वाऽनुलेपनं नासिकयोर्मुखस्य चोपगृह्णीते 'प्राणापानौ मे तर्पय, चक्षुर्मे तर्पय, श्रोत्रं मे तर्पय , इति । १८ । 'पितरः शुन्धध्वम्, इति पाण्योरवनेजनं दक्षिणा निषिच्यानुलिप्यजपेत् 'सुचक्षा अहमक्षीभ्यां भूयास४ंसुवर्चा मुखेन । सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम्, इति । १९ । अहतं वासो धौतं वाऽमैत्रेणाच्छादयीत 'परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि । शतं च जीवामि शरदः पुरूचीरायस्पोषमभि संव्ययिष्ये, इति । २० । अथोत्तरीयम् ' यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती यशो भगश्च मा विदद् यशो मा प्रतिपद्यताम् ' इति । २१ । एकं चेत् पूर्वस्योत्तरवर्गेण प्रच्छादयीत । २२ । सुमनसः प्रतिगृह्णाति 'या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाया ता अहं प्रतिगृह्णामियशसा चभगेन च'इति।२३। अथाबध्नीते' यद् यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार

त्रिपुलं पृथु। तेन संग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि' इति । २४ । उष्णीषेण शिरो वेष्टयते ' युवा सुवासाः ' इति । २५ । ' अलंकरणमसि, भूयोऽलंकरणं भूयात् इति कर्णवेष्टकौ । २६ । ' वृत्रस्य ' इत्यङ्क्ते आंक्षणी । २७ । रोचिष्णुरसि' इत्यात्मानमादर्शे प्रेक्षते ।२८। छत्रं प्रतिगृह्णाति बृहस्पते श्छदिरसि पाप्मनो मामन्तर्धेहि' तेजसोयशसो माऽन्तर्धेहि' इति ।२९। 'प्रतिष्ठे स्थो विश्वतो मा पातम्'इत्युपानहौ प्रतिमुञ्चते । ३० । 'विश्वाभ्यो मानाष्ट्राभ्यस्परिपाहि सर्वतः' इति वैणवं दण्डमादत्ते । ३१ । दन्तप्रक्षालनादीनि नित्यमपि वास श्छत्रोपानहश्चापूर्वाणि चेन्मन्त्रः ॥ ३२ ॥

वेद समाप्त करके स्नान करे (इसी लिये स्नातक कहते हैं) । १ । या ४८ वर्ष तक पढ़ के ही स्नातक हो । २ । कोई १२ वर्ष के पीछे ही स्नातक बनाते हैं । ३ । गुरु की आज्ञा पाकर ही ।४। विधि विधेय वेद हैं।५। कोई छः अङ्गों को वेद कहते हैं । ६ । कल्पमात्र को नहीं । ७ ॥

जब यज्ञ के कर्म कराने वाले की इच्छा हो तब ही स्नातक हो । ८ । (विधिः) आचार्य के चरण स्पर्श कर, अग्नि में समिधा छोड़कर अग्नि से उत्तर की ओर अग्र भाग बिछाई कुशों पर ८ घड़े, जल के भरे हुवों से । ९ ।

" ये अप्स्व० " इस मन्त्र से एक घड़े का जल लेकर । १० । उस से अभिषेक करै । तेनाभि० इस मन्त्र से ।११। फिर येन श्रियमकृणु० इस से । १२ । फिर आपोहिष्ठा० इन ३ मन्त्रों से ३ । ४ । ५ वें घड़े से । १३ । शेष ६ । ७ । ८ वें इन तीन घड़ो से चुप चाप अभिषेक करै । १४ । " उदुत्तमम्० " मन्त्र से तगड़ी छोड़ दे । दण्ड को धर कर अन्य वस्त्र पहिन कर सूर्य के सामने खड़ा होता है । १५ । " उद्यन् भ्राजि० " इत्यादि मन्त्र पढ़ता है । १६ । दही वा तिल खाकर जटा लोम नखों को कटाकर गूलर को दतौन से दान्त शुद्ध करै । "अन्नाद्याय०" ऐसे मन्त्र पढ़े ।१७ उवटन मलकर फिर स्नान करै "प्राणापानौ मे० " उस मन्त्र से मुखनासा पर चन्दन लगावे ॥१८॥ "पितरः शुन्धध्वम्" कहकर दक्षिण को मुखकर दोनों हाथों से जल देकर चन्दन लगाता हुवा "शुचक्षा०" ऐसे जप करै । १९ । नवीन वस्त्र वा धुले वस्त्र धोती " परिधास्यै० " इस मन्त्र से पहिने । २० । " यशसामा० " इस मन्त्र से दुपट्टा ओढ़े । २१ । यदि १ ही धोती हो तो पहिले मन्त्र से आधी बांधले उत्तर मन्त्र से आधी ओढ़लेवे । २२ । " या आहरज्जमदग्निः० " इस मन्त्र से आचार्य से पुष्प माला लेवे ।२३। " यद्यशो० " इस मन्त्र से गले में पहिने । २४ । पगड़ी से शिर को लपेटता है " युवासु० " इस मन्त्र से । २५ । "अलंकरणमसि " इस मन्त्र से कान लपेटे । २६ । " वृत्रस्य० " आंखों में अञ्जन डाले । २७ । " रोचिष्णुरसि० " इस मन्त्र से दर्पण देखे । २८ । छत्र लेता है " बृहस्पते० " इस मन्त्र से । २९ । "प्रतिष्ठेस्थो०" मन्त्र से जूता पहिने ।३०। "विश्वाभ्यो० मन्त्र से बांस का दण्ड लेता है । ३१ । दन्तधावनादि वस्त्र छाता जूता जब २ नवीन पहिने तब २ मन्त्र पढ़े ॥ ३२ ॥

कण्डिका १ (स्नातक के लिये यम)।

स्नातस्य यमान् वक्ष्यामः । १ । कामादितरः ॥ २ ॥ नृत्यगीतवादित्राणि न कुर्यान्न च गच्छेत् ॥ ३ ॥ कामं तु 'गीतं गायति वैव गीते वा रमते, इति श्रुतेर्ह्यपरम् । ४ । क्षेमे नक्तं ग्रामान्तरं न गच्छेन्न च धावेत् । ५ । उदपानावेक्षण वृक्षारोहण फलप्रपतन सन्धिसर्पण विवृतस्नान विषमलङ्घन शुक्तवदन सन्ध्यादित्यप्रेक्षण भैक्षणानि न कुर्यात् 'न ह वै स्नात्वा भिक्षेतापह वै स्नात्वा भिक्षां जयति इति श्रुतेः । ६ । वर्षत्यप्रावृतो व्रजेत् 'अयं मे वज्रः पाप्मानमपहनत्' इति । ७ । अप्स्वात्मानं नावेक्षेत । ८ । अजातलोम्नीं विपुंस्नीं षण्ढञ्च नोपहसेत् । ९ । गर्भिणी विजनन्येति ब्रूयात् । १०। सकुलमिति नकुलम् ॥ ११ ॥ भगालमिति कपालम् ॥ १२ ॥ मणिधनुरितीन्द्रधनुः ॥ १३ ॥ गां धयन्तीं परस्मै नाचक्षीत ॥ १४ ॥ उर्वरायामनन्तर्हितायां भूमावुत्सर्पंस्तिष्ठन्न मूत्र पुरीषे कुर्यात् ॥ १५ ॥ स्वयं विशीर्णेन काष्ठेन प्रमृजीत ॥१६॥ विकृतं वासो नाच्छा-

दर्यात ॥ १७ ॥ दृढव्रतो वधत्रः स्यात् सर्वत आत्मनं गोपायेत् सर्वेषां मित्र मिव ॥१८॥ ७ ॥

कण्डिका ७

अर्थ—स्नातक के यम कहते हैं। १। इन यमो को अन्य पुरुष भी चाहे तौ पालन करै। २। नाचना, गाना, बजाना न स्वयं करै न इन कार्यों में जावे। ३। "गीतं गायति०" "गीत गाता है वा गीत से प्रसन्न होता है" यह श्रुति है इस से सामवेद गानामात्र चाहे तौ दोष नहीं। ४। विना आपत्ति समय के रात में दूसरे ग्राम में न जावे न दौड़े। ५। कूप झांकना वृक्षों पर चढ़ना फल झाड़ना नस चटकाना, नग्न स्नानऊंचे नीचे में कूदना कठोर भाषण, उदय अस्त होते सूर्य का देखना और भिक्षा मांगना यह कर्म न करै। "नह वै० शतपथ १०। ३। ३। ७ भिक्षा वर्जित है। ६। वर्षा में भी छत्र न लगावे। अयं मैं मन्त्र पढ़ता हुवा। ७। पानी में मुख न देखे। ८। जब तक रोम न आये हों ऐसी बाला स्त्री और नपुंसक से उपहास=हंसी न करै (विवाह न करै यह तात्पर्य है।)। ९। गर्भिणी स्त्री को विजन्या कह कर बोले। १०। नीले को नकुल न कह सकुल कहै ।११। कपाल को भगाल। १२। इन्द्र धनु को मणि धनुष कहै ।१३। बछड़े को चुंखाती गौ को किसी को न बतावे। १४। जमे हुवे या बुये हुवे खेत में या चलते २ या खड़े २ विष्ठा मूत्र न करै। १५। स्वयं गिरी हुई लकड़ी से गुद को पोछे (फिर मट्टी जल से शुद्ध करै)। १६। बिगड़ा (विकृत) वस्त्र न ओढ़े। १७। दृढ़ प्रतिज्ञ रक्षक सब का मित्र हो ॥ १८ ॥

कण्डिका ८ (स्नातक के व्रत) प्रक्षिप्त

तिस्रो रात्रीर्व्रतं चरेत्। १। * अमांसा-श्यमृण्मयपायी। २। स्त्रीशूद्रशवकृष्णशकुनि शुनांचादर्शनमसम्भाषा च तैः। ३। शवशूद्र-सूतकान्नानि च नाद्यात्। ४। मूत्रपुरीषेष्ठीवनं चातपे न कुर्यात् सूर्याच्चात्मानं नान्तर्दधीत। ५। तप्तेनोदकार्थान् कुर्वीत। ६। अवज्योत्य रात्रौ भोजनम्। ७। सत्यवदनमेव वा। ८। दीक्षितो-प्यातपादीनि कुर्यात् प्रवर्ग्यवांश्चेत्। ९ ॥

कण्डिका ८

समावर्तन से तीन राततक व्रतकरे १ मांस न खावे और मट्टी के पात्र में पानी न पीवे। स्त्री, शूद्र, शव, काले पक्षी, कुत्ता इनको न देखे न इन से बोले। ३। शव शूद्र और सूतक का अन्न न खावे। ४। धूप में मूत्र विष्टा थूकना न करे छत्री

---

* यह समस्त कण्डिका ही प्रक्षिप्त प्रतीत होती है। जब कं० ७ में स्नातक के नियम कह चुके थे तब उसी में यह सूत्र भी धर देते। मांस का मान=वहुद अर्थ भी कर दिया तौ क्या मट्टी के पात्र में भोजन क्यों न करे। गर्म जल से स्नानादि सभी क्रिया अंड वण्ड हैं। यमो के वर्णन में पहले ही " यमान् वक्ष्यामः " ऐसी प्रतिज्ञा है आगे पीछे सभी कण्डिकाओं के आरम्भ में प्रतिज्ञा हैं इस कं० में कोई प्रतिज्ञा भी नहीं है ॥

धूपमें भी न लगावे। ५। गरम जल से स्नान संध्यादि करै। ६। रात्रि को दीपक जलाकर भोजन करे। ७। अथवा सब नियमों के बदले सत्य भाषण ही करे। ८। दीक्षित समर्थ हो तो उक्त नियम करे॥ ९॥

कण्डिका ९

अथातः पञ्च महायज्ञाः। १। वैश्वदेवादन्नात् पर्युक्ष्य स्वाहाकारैर्जुहुयाद् ब्रह्मणे प्रजापतये गृह्याभ्यः। कश्यपायानुमतय इति। २। भूतगृह्येभ्यो मणिके त्रीन् पर्जन्यायाद्भ्यः पृथिव्यै। ३। धात्रे विधात्रे च द्वार्ययोः। ४। प्रति दिशं वायवे दिशां च। ५। मध्ये त्रीन् ब्रह्मणोऽन्तरिक्षाय सूर्याय। ६। विश्वेभ्यो देवेभ्यो विश्वेभ्यश्च भूतेभ्यस्तेषामुत्तरतः। ७। उषसे भूतानां च पतये परम्। ८। पितृभ्यः स्वधा नम इति दक्षिणतः। ९। पात्रं निर्णिज्योत्तरापरस्यां दिशि निनयेत् 'यक्ष्मैतत्ते, इति। १०। उद्धृत्याग्रं ब्राह्मणायावनेज्य दद्यात् 'हन्तते, इति। ११। यथार्हं भिक्षुकानतिथींश्च सम्भजेरन्। १२। बालज्येष्ठा गृह्या यथार्हमश्नीयुः। १३। पश्चात् गृहपतिः पत्नी च। १४। पूर्वो वा

गृहपतिः' तस्मादुस्वादिष्टं गृहपतिः पूर्वोऽतिथिभ्योऽश्नीयाद्, इति श्रुतेः । १५ । अहरहः स्वाहा कुर्यादन्नाभावे केनचिदाकाष्ठाद् देवेभ्यः पितृभ्यो मनुष्येभ्य श्चोदपात्रात् । १६ ॥९॥

कण्डिका ९

अब आगे पञ्चयज्ञ हैं । १ । वैश्वदेव के अन्न से पर्युक्षण कर स्वाहा शब्द लगाकर ब्रह्मणे, प्रजापतये, गृह्याभ्यः, कश्यपाय, अनुमतये, इन का होम करे ।२। पर्जन्यायनमः, अद्भ्यो नमः पृथिव्यैनमः ऐसे ३ बलि देवे । ३ धात्रे, विधात्रे, और द्वार्ययोः नमः कह बलि दे । ४ । पूर्वादि दिशाओं में दिशाओं को वायवे स्वाहा कह कर बलि धरे । ५ । मध्यमे ३ बलि ब्रह्मणे स्वा० । अन्तरिक्षाय स्वाहा सूर्याय स्वा० ।६। उत्तर में विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा० विश्वेभ्यो भूतेभ्यः । ७ । उस से आगे उषसे० और भूतानाम् पतये स्वाहा नमः । ८ । पितृभ्यः स्वधानमः ऐसे कह कर दक्षिण में । । ९ । पात्र को धोकर उत्तर की ओर बंधादे " यक्ष्मैतत्ते " यह कहे । १० । हन्तसे कहकर ब्राह्मण के आगे भोजन देवे । ११ । यथायोग्य भिक्षुकों को अतिथियों को भी देवे ।१२। घर के बालक बड़े सब यथायोग्य भोजन करें । १३ । फिर गृहपति और उसकी पत्नी भी भोजन करैं ।१४। या पहले गृहपति खावे पीछे पत्नी खावे । क्योंकि अतिथि पूर्व जिमाकर पहिले गृहपति खावे यह श्रुत है ।१५। नित्य २ होम करे । अन्न न होतो किसी समिधा से ही देवों मनुष्यों पितरों को जल के पात्र से प्रसन्न करे १६

कण्डिका १० (अध्ययनारम्भ)।

अथातोऽध्यायोपाकर्म । १ । ओषधीनां प्रादुर्भावे श्रवणेन श्रावण्यां पौर्णमास्याᳩश्रावणस्य पञ्चमीᳩहस्तेन वा । २ । आज्यभागाविष्ट्वाऽऽज्याहुतीर्जुहोति । ३ । 'पृथिव्या अग्नये, इत्यृग्वेदे । ४ । अन्तरिक्षाय वायवे, इति यजुर्वेदे । ५ । 'दिवे सूर्याय, इति सामवेदे । ६ । 'दिग्भ्यश्चन्द्रमसे, इत्यथर्ववेदे । ७ । 'ब्रह्मणे छन्दोभ्यश्च, इति सर्वत्र । ८ । प्रजापतये देवेभ्य ऋषिभ्यः श्रद्धायै मेधायै सदस्पतयेऽनुमतये इति च । ९ । एतदेवव्रतादेशन विसर्गेषु । १० । सदसस्पतिम्, इत्यक्षतधानास्त्रिः ।११। सर्वेऽनुपठेयुः । १२ । हुत्वाहुत्वौदुम्बर्यस्तिस्तस्तिस्रः समिध आदध्युरार्द्रा सपलाशा घृताक्ताः सावित्र्या । १३ । ब्रह्मचारिणश्चपूर्वकल्पेन । १४ । शन्नो भवन्तु, इत्यक्षतधाना अखादन्तः प्राश्नीयुः । १५ । दधिक्राव्णो, इति भक्षयेयुः । १६ । स यावन्तं गणमिच्छेत तावंतस्तिलानाकर्षफलके जुहुयात् सावित्र्या ' शुक्र ज्योतिः , इत्यनुवाकेनवा । १७ । प्राशनान्ते प्रत्यङ्मुखे-

भ्य उपविष्टेभ्य ओंकारमुक्त्वा त्रिश्रसावित्रिम-
ध्यायादीन् प्रब्रूयात् । १८ । ऋषिमुखानि बह्वृ-
चानाम्।१९। पर्वाणि छन्दोगानाम्।२०। सूक्तान्य-
थर्वणाम् ।२१। सर्वे जपन्ति 'सहनोऽस्तु सहनो-
ऽवतु सह न इदं वीर्यवदस्तुब्रह्म। इन्द्रस्तद्वेद येन
यथा नविद्विषामहे, इति। २२ । त्रिरात्रं नाधी-
यीरन् । २३ । लोमनखानामनिकृन्तनम् । २४ ।
एके प्रागुत्सर्गात् । २५ ।

कण्डिका १०

अथ पढ़ने का कर्म कहते हैं ।१। ओषधियों के उगने पर श्रवण नक्षत्र युक्त श्रावणी पूर्णिमा को वा श्रावण की पञ्चमी हस्त नक्षत्र से युक्त हो ।२। आज्यभागाहुति करके आज्याहुति देता है । ३ । पृथिव्यै स्वा० अग्नये स्वाहा यह ऋग्वेद पाठ में । ४ । अन्तरिक्षायस्वाहा वायवे स्वाहा यह यजुर्वेद पढ़ने ।५। दिवेस्वा० सूर्यायस्वा० यह सामवेद में ।६। 'दिग्भ्यःस्वा०चन्द्र-मसे स्वाहा ऐसा अथर्व वेद में ।७। ब्रह्मणे स्वा० और छन्दोभ्यः स्वाहा यह सब वेदों में ।८। प्रजापतये । देवेभ्यः । ऋषिभ्यः। श्रद्धायै, मेधायै, सदसस्पतये, अनुमतये (स्वाहा लगाकर) ।९। ऐसे ही यज्ञोपवीत और समावर्तनों में करै । १० । सद सस्पति० (य० ३२ । १३) मन्त्र से चावलों की खील से आचार्य ३ आहुति देवे ।.११ । मन्त्र सब शिष्य साथ पढ़ें । १२ । होम कर करके गूलर की ३ । ३ समिधा पत्तों सहित

गीली घृत में भिगो कर गायत्री पढ़कर लेवें।१३। आचार्य के साथ २ ब्रह्मचारी भी होमें। १४।

कण्डिका ११ (अनध्याय प्रकरण)।

वातेऽमावास्यायाᳬसर्वानध्यायः।१। आद्रुा-शनेचोल्काऽवस्फूर्जद्भूमिचलनाग्न्युत्पातेष्वृतुसन्धिषुचा कालात् ।२। उत्सृष्टेष्वभ्रदर्शनेसर्वरूपे चत्रिरात्रं त्रिसन्ध्यं वा।३। भुक्त्वाऽऽर्द्रपाणिरुदा के निशायाᳬसन्धिवेलयोरन्त: शवेग्रामेऽन्तर्दिवाकीर्त्ये।४। धावतोऽभिशस्तपतितदर्शना-श्चार्याभ्युदयेषु च तत्कालम् ।५। नीहारे वादित्र शब्द आर्तस्वने ग्रामान्ते श्मशाने श्वगर्दभोलूकशृगालसामशब्देषु शिष्टाचरिते च तत्कालम् ।६। गुरौप्रेतेऽपोऽभ्यवेयाद्, दशरात्रं चोपरमेत् ।७। सतानूनप्त्रिणि सब्रह्मचारिणिच त्रिरात्रम्।८।एकरात्रमसब्रह्मचारिणि ।९। अर्द्धषष्ठान् मासानधीत्योत्सृजेयुः।१०। अर्द्धसप्तमान्वा।११। अथेमामृचं जपन्ति 'उभा कवी युवा यो नो धर्मः परापतत्। परिसख्यस्य धर्मणो विसख्यानि विसृजामहे, इति।१२। त्रिरात्रᳬसहोष्य विप्रप्रतिष्ठेरन्।१३।

कण्डिका ११

अतिवायु चलते दिन और सब अमावसों को छुट्टी है।१।

श्राद्ध भोजन * उल्कापात बादल गर्जने पर भूमि कोप अग्नि पड़ौस में लगने पर ऋतु परिवर्त्तन के दिन १ । १ दिन छुट्टी हो । २ । वेद समाप्ति और जब समस्त दिन मेघदर्शन न हो तीन रात या ३ सन्ध्या का अनध्याय हो ।३। भोजन के पीछे यावत् भीगे हाथ रहें । जल में नौका पर बैठे रात में, सायं प्रातः सन्ध्या के समय, ग्राम में मुर्दा पड़ा हो ॥ या दिवा कीर्त्ति=कोई चाण्डाल पास हो तब तक वेद न पढ़े । छुट्टी है । दौड़ते पाखण्डी, पतित के देखते हुवे । आश्चर्य देखने के समय (उसी समय तक) वेद न पढ़े ।५। कुहरा, वर्षते बाजा बजते, हा हा कार में, सिवाने पर श्मशान में, कुत्ते गधे उल्लू गीदड़ बोलते में, सामवेद के, गाते समय और किसी सज्जन के आने पर उस समय न पढ़े । ६ । गुरु के मरने पर जल में स्नान करे और १० दिन तक पठनबन्द करे । ७ । सोमयाजी ऋत्विज के और ब्रह्मचारी सहाध्यायी के मरने पर ३ दिन । ८ । अ ब्रह्मचारी सहाध्यायी की मृत्यु पर १ दिन अनध्याय करे ।९। साढ़े छः मास पढ़कर छुट्टी करे (वेद की) १० या ७॥ मास । ११ । फिर गुरु शिष्य साथ इस ऋचा को जपैं " सभाकवां० " । १२ । तीन रात गुरुकुल में छुट्टी मनाकर अलग हो जावे । १३ ।

कण्डिका १२ (उत्सर्ग कर्म)

पौषस्य रोहिण्यां मध्यमायां वाऽष्टकाया-मध्यायानुत्सृजेरन् । १ । उदकान्तं गत्वाद्भिर्दें-वांश्छन्दांऽसिवेदानृषीन्पुराणाचार्यान्संवत्सरं

* जिस दिन बहुत श्रद्धा से प्रीति भोजादि हुवा हो वह उस दिन अधिक खाया जाता है ॥

च सावयव पितृनाचार्यान् स्वांश्चतर्पयेयुः ।२।
सावित्रीं चतुरनुद्रुत्य विरताः स्म'इति प्रब्रूयुः ।३।
क्षपणं प्रवचनं च पूर्ववत् । ४ ।

कण्डिका १२

पौष के रोहिणी नक्षत्र में या सावस या अष्टमी को पढ़ना छोड़ दे । १ । जलाशय पर जा के जल से देवतों छन्दों, वेदों, ऋषियों, पुराणाचार्यों, गन्धर्वों ,अन्यआचार्यों संवत्सर को और महीनों को । पितरो=ऋतुओं को अपने आचार्यों को भी तृप्त करें । २ । गायत्री चार बार पढ़ कर "विरताः स्म" ऐसे कहे । दूसरे आकर पूर्व के समान फिर पढ़े तब अनध्याय करे । ४ ।

कण्डिका १३ (प्रथम हल योजन)

पुण्याहे लाङ्गलयोजनं ज्येष्ठया वैन्द्रदैवत्यम् । १ । इन्द्रं पर्जन्यमश्विनौ मरुत उदलाकाश्यपꣳस्वातिकारीꣳसीतानुमतिं दध्ना तण्डुलै र्गन्धैरक्षतैरिष्ट्वाऽनडुहो मधुघृते प्राशयेत् । २ । 'सीरायुञ्जन्ति, इति योजयेत् ।३। 'शुनꣳसुफालाः, इति कृषेत्फालं वाऽऽलभेत ।४। नवाग्न्युपदेशाद्वपनानुषङ्गाच्च ।५। अग्र्यमभिषिच्याकृष्टं तद्वाकृष्युः ।६। स्थालीपाकस्य पूर्ववद्देवता यजेदुभयोर्व्रीहियवयोः प्रवपन्त्सीतायज्ञे च ।७। ततो ब्राह्मणभोजनम् । ८ ॥

कण्डिका १३

पवित्र दिन हल जोते । इन्द्र देवता के ज्येष्ठा नक्षत्र में । १ । इन्द्र, पर्जन्य, अश्विनी दोनों मरुत् उदल काश्यप, स्वातिकारी सीता और अनुमति को दही चावल सुगन्धों और जौ से आहुति देकर अनुड्ह बैल को घृत मीठा चटावे ।२। सीरा युंजन्ति० य० १२ । ६७ मन्त्र पढ़कर हल जोड़े । ३ । शुनꣳसुफाला: य० १२ । ६९ इस से फाली को ठीक करे या जोते । ४ । या अग्नि में आहुति देते समय ही इन मन्त्रों को पढ़े हल जोड़ते जातते समय न पढ़े । ५।। बिना जते खेत में हल जोते और उत्तम बैलको उस दिन पहिले पानी से साफ़ करले । ६ । जब २ धान जौ आदि बोने हों तभी पूर्व कहे देवों को स्थाली पाक से होम करे । और सीता यज्ञ में भी । ७ । फिर ब्राह्मण जिमावे । ८ ॥ १३ ॥

कण्डिका १४ (श्रवण कर्म) ।

अथातः श्रवणा कर्म ।१। श्रावण्यां पौर्णमास्याम् ।२। स्थालीपाकꣳश्रपयित्वाऽक्षतधानाश्चैककपालं पुरोडाशं धानानां भूयसोः पिष्टाऽऽज्यभागाविष्ट्वाऽऽज्याहुतीर्जुहोति ।३। अपश्वेतपदा जहि पूर्वेण चापरेण च सप्तच्चवारुणीरिमाः प्रजाःसर्वाश्च राजबान्धवैःस्वाहा।४।नवै श्वेतस्याभ्याचारेऽहिर्ददर्श कञ्चन। श्वेताय वैदर्व्याय नमः स्वाहा इति ।५। स्थालीपाकस्य जुहोति विष्णवे, श्रवणाय,श्रावण्यै पौर्णमास्यै, वर्षाभ्यश्चेति ।६।

धानावन्तमिति धानानाम्।७।घृताक्तान् सक्तून् सर्पेभ्यो जुहोति।८। आग्नेय पाण्डुपार्थिवानाꣳ सर्पाणामधिपतये स्वाहा, श्वेतवायवान्तरिक्षाणाꣳसर्पाणामधिपतयेस्वाहा, इति।९। सर्वहुत मेकं कपालं'ध्रुवाय भौमाय स्वाहा' इति।१०। प्राशनान्ते सक्तूनामेकदेशꣳ शूर्पेन्युप्योपनिष्क्रम्य बहिः शालायाः स्थण्डिलमुपलिप्योल्कायां ध्रियमाणायां'माऽन्तरागमत'इत्युक्त्वा वाग्यतः सर्पानवनेजयति।११। आग्नेय पाण्डुपार्थिवानाꣳ सर्पाणामधिपतयेऽवनेनिक्ष्व, श्वेत वायवान्तरिक्षाणाꣳ सर्पाणामधिपतेऽवनेनिक्ष्व, अभिभूः सौर्यदिव्यानाꣳ सर्पाणामधिपतेऽवनेनिक्ष्व'इति।१२। यथाऽवनिक्तं दर्व्योपघातꣳसक्तून्सर्पेभ्यो बलिꣳ हरति।१३। आग्नेय पाण्डुपार्थिवानाꣳ सर्पाणामधिपते एषते बलिः, श्वेतवायवान्तरिक्षाणां सर्पाधिपत एषते बलिः, अभिभूः सौर्यदिव्यानाꣳ सर्पाणामधिपत एषते बलिः' इति।१४। अवनेज्य पूर्ववत् कङ्कतैः प्रलिखति।१५। आग्नेयपांडुपार्थिवाना॒ँ सर्पाणामधिपते प्रलिखस्व श्वेतवायवान्तरिक्षाणा॒ँ सर्पाणामधिपते प्रलिखस्व, अभिभूः सौर्यदिव्या॒ँ सर्पाणामधिपते प्रलिखस्व' इति।१६। अञ्जनानुलेपन॒ँ स्रजश्चाञ्जस्वानुलिम्पस्व स्रजोऽपिनह्यस्व, इति।१७। सक्तुशेष॒ँ स्थण्डिले न्युप्योदपात्रेणोपनिनीयोपतिष्ठते 'नमोऽस्तु सर्पेभ्यः, इति तिसृभिः।१८। स यावत् कामयेत 'न सर्पा अभ्युपेयुरिति. तावत् सन्ततयोदधारया निवेशनं त्रिः परिषिञ्चन्परीयात 'अपश्वेत पदा जहीति' द्वाभ्याम्।१९। दर्वीशूर्पे प्रक्षाल्य प्रतप्य प्रयच्छति।२०। द्वारदेशे

मार्जयन्तः 'आपोहिष्ठा, इति तिसृभिः ।२१। अनुगुप्तमेत सक्तुशेषं निधाय ततोऽस्तमितेऽस्तमिते ऽग्निं परिचर्य दर्व्यों पघात सक्तून् सर्पेभ्यो बलिं हरेदाग्रहायण्याः ।२२। तं हरन्तं नान्तरेण गच्छेयुः । २३ । दर्व्याचमनं प्रक्षाल्य निदधाति ।२४। धानाः प्राश्नन्त्यसंस्यूताः ।२५। ततो ब्राह्मण भोजनम् । २६ । १४ ॥

कण्डिका १४ का भावार्थ

अब आगे श्रवणा कर्म है ।१। श्रावणी पौर्णिमा में ।२। स्थाली पाक पकाकर सत्तू जौ की खील कुछ सत्तू जौ के और पुरोडाश बनावे, दो आज्य भाग होमे। आज्याहुति देता है । ३ । अपश्वेतपदा० । ४ । नवैश्वेतस्या० । ५ । इन से आहुति देकर स्थालीपाक से होमे। विष्णवे, श्रवणाय, श्रावण्यै, पौर्णमास्यै, वर्षाभ्यः इत्यादि स्वाहान्त आहुति दे । ६ । धानावन्तम् (य० २० । २९) से खीलों को होमे घी मिलाकर सत्तुओं से सर्पों के लिये होम करे । ८ । आग्नेय० आदि मन्त्रों से आहुति दे । ९ । ध्रुवाय भौमाय स्वाहा कह कर कपाल में बनाये पुरोडाश को समस्त १ आहुति देवे । १० । संस्रव प्राशन कर कुछेक सत्तू छाज में धर बाहर आकर । शाला के बाहर चौंतरी=स्थंडिल को लीप कर जलती लकड़ी धर कर " माऽन्तरा गमत " ऐसे कह चुप हो सर्पों को जल देता है । इत्यादि कृत्य प्रक्षिप्त प्रतीत होता है । अतः भावार्थ नहीं किया ॥

कण्डिका १५ (इन्द्रयज्ञ)

प्रौष्ठपद्यामिन्द्रयज्ञः । १ । पायसमैन्द्रं

श्रपयित्वा ऽपूपांश्चापूपैः स्तीर्त्वाऽऽज्यभागावग्नि-श्चाऽऽज्याहुतीर्जुहोतीन्द्रायेन्द्राण्या अजायैकपदे-ऽहिर्बुध्न्याय प्रौष्ठपदाभ्यश्चेति ।२। प्राशनान्ते मरुद्भ्यो बलिं हरति 'अहुतादो मरुतः, इति श्रुतेः ।३। आश्वत्थेषु पलाशेषु 'मरुतो ऽश्वत्थे संस्थुः, इति वचनात् ।४। 'शुक्रज्योतिः इति प्रतिमन्त्रम् ।५। विमुखेन च ।६। मनसा।७।'नामान्येषामेतानि, इति श्रुतेः । ८ । इन्द्र देवीः, इति जपति । ९ । ततो ब्राह्मण भोजनम् । १० ।१५ ॥

१५ कण्डिका

भादों की पूर्णिमा को इन्द्रयज्ञ होता है । १ । इन्द्र को खीर और पूड़े पकाकर ४ पूड़े अग्नि के चारों ओर धरे । आज्यभाग २ आहुति दे । इन्द्राय, इन्द्राण्यै, अजाय, एक पदे, अहिर्बुध्न्याय, प्रौष्ठपदाभ्यः, स्वाहान्त कह आहुति दे ।२। प्राशन के पीछे मरुतों को बलि देता है । अहुत खाने वाले मरुत हैं यह श्रुति है । पीपल के पत्तों पर बलि दे । मरुत (हवा) पीपल पर रहता है ।४। शुक्र ज्योति इत्यादि मन्त्रों से आहुति दे । ५ । तथा विमुख से भी । ६ । मन से मन्त्र पढ़कर । ७ । यह मरुत के नाम हैं यह श्रुति है । ८। "इन्द्र देवीः" इस मन्त्र को जपता है ९। फिर ब्राह्मण भोजन करावे १०

कण्डिका १६ (पृषातक कर्म)

आश्वयुज्यां पृषातकाः । १ । पायसमैन्द्रं

श्रपयित्वा दधिमधुघृतमिश्रं जुहोतीन्द्रायेन्द्राण्या अश्विभ्यामाश्वयुज्यै पौर्णमास्यै शरदे चेति । २ । प्राशनान्ते दधिपृषातकमञ्जलिना जुहोति 'ऊनं मे पूर्यतां पूर्णं मे मा व्यगात् स्वाहा' इति । ३ । दधिमधुघृतमिश्रममात्या अवेक्षन्त 'आयात्विन्द्रः' इत्यनुवाकेन । ४ । मातृभिर्वत्सान्सꣳसृज्यताꣳ रात्रिमाग्रहायणीं च । ५ । ततो ब्राह्मणभोजनम् । ६ । १६ ॥

१६ कण्डिका

आश्विन की पूर्णिमा का पृषातक यज्ञ है । १ । इन्द्र को खीर पकाकर दही शहद घी मिलाकर होमता है इन्द्राय इन्द्राण्यै, अश्विभ्यां, आश्वयुज्यै, पौर्णिमास्यै और शरदे, स्वाहा कह होमे ।२। प्राशनान्त में पृषाकत को दोनों हाथों से होमे । ऊनं मे० इस मन्त्र से । ३ । दही मधु घृत खीर में मिलाकर मित्रजन देखें । "आयात्विन्द्रः" (य० २० । २७) इस अनुवाक से होम करे । ४ । उस असौज की रात में माताओं (गौओं) से बछड़े मिलावे ।५। फिर ब्रह्मभोज करे ६

कण्डिका १७ (सीतायज्ञ)

अथ सीतायज्ञः । १ । व्रीहियवानां यत्र यत्र यजेत तन्मयꣳ स्थालीपाकꣳ श्रपयेत् । २ । कामादीजानोऽन्यत्रापि व्रीहियवयोरेवान्यतरꣳ स्थालीपाकꣳ श्रपयेत् । ३ । न पूर्वचोदित-

त्वात् सन्देहः । ४ । असम्भवाद्विनिवृत्तिः । ५ । क्षेत्रस्यपुरस्तादुत्तरतो वा शुचौ देशे कृष्टे फलानुपरोधेन । ६ । ग्रामे वोभयसम्प्रयोगादविरोधात् । ७ । यत्र स्नपयिष्यन्नुपलिप्त उद्धृतावोक्षितेऽग्निमुपसमाधाय तन्मिश्रैर्दर्भैः स्तीर्त्वाऽऽज्यभागौ बिष्ट्वाऽऽज्याहुतीर्जुहोति । ८ । पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः । तमिहेन्द्र मुपह्वये शिवानः सन्तु हेतयः स्वाहा ॥ यन्मेकिञ्चिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन् । तन्मे सर्वं ᳪ समृध्यतां जीवतः शरदः शतᳪ स्वाहा । सम्पत्तिर्भूतिर्भूमिर्वृष्टि ज्यैष्ठ्य ᳪ श्रैष्ठ्य ᳪ श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा । यस्या ऽभावे वैदिक लौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम् । इन्द्र पत्नीमुपह्वये सीताᳪ सा मे त्वनपायिनी भूयात् कर्मणि कर्मणि स्वाहा । अश्वावतीगोमती सूनृतावती बिभर्ति या प्राणभृतो अतन्द्रिता । खलमालिनी मुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवाᳪ सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहेति । ९ । स्थालीपाकस्य जुहोति सीतायै जयायै शमायै भूत्या इति । १० । मन्त्रवत् प्रदानमेकेषाम् ।११।

स्वाहाकारप्रदाना इति श्रुतेर्विनिवृत्तिः । १२ ।
स्तरणशेष कुशेषु सीतागोप्तृभ्योबलिं हरति
पुरस्ताद्ध ये त आसते सुधन्वाना निषङ्गिणः ।
ते त्वा पुरस्ताद्ध गोपायन्त्वप्रमत्ता अनपायिना
नम एषां करोम्यहं बलिमेभ्यो हरामीममिति ।
१३ । अथ दक्षिणतोऽनिमिषा वर्मिण आसते
तेत्वा दक्षिणतो गोपायन्त्वप्रमत्ता अनपायिना
नम एषां करोम्यहं बलिमेभ्यो हरामीममिति ।
१४ । अथ पश्चात आभुवः प्रभुवो भूतिर्भूमिः
पार्ष्णिः शुनङ्कुरिः । ते त्वा पश्चाद्ध गोपा-
यन्त्वप्रमत्ता अनपायिना नम एषांकरोम्यहं
बलिमेभ्यो हरामीममिति।१५। अथोत्तरतो भीमा
वायुसमा जवे ते त्वोत्तरतः क्षेत्रे खले गृहेऽध्वनि
गोपायन्त्वप्रमत्ता अनपायिना नम एषां करो
म्यहं बलिमेभ्यो हरामीममिति । १६ । प्रकृता-
दन्यस्माद्‌ाज्यशेषेण च पूर्ववद्बलिकर्म । १७ ।
स्त्रियश्चोपयजेरन्नाचरितत्वात् ।१८। सं स्थिते
कर्मणि ब्राह्मणान् भोजयेत् ब्राह्मणान् भोज-
येत् । १९ ॥१७॥ इति द्वितीयकाण्डम् समाप्तम् ॥

कण्डिका १७

अब सीता यज्ञ है । १ । धान या जव जिस का करे उसी का (स्थालीपाक) बटलोई में भात बनावे । २ । चाहे हो चाहे अन्य मार्गों में भी जौ या धान किसी का भात बनावे । ३ । पहिले कहीं कहा नहीं इस लिये सन्देह है । ४ । असम्भव होने से संदेह नहीं । ५ । खेत के पूर्व या उत्तर भाग में जहां शुद्ध हल से जुते हुवे खेत को हानि न हो । ६ । या ग्राम के खेड़े पर जहां खेत और ग्राम मिले हुवे हैं वहां करे कोई विरोध न होने से । ७ । जहां भात पकाना है वहां गोबर मट्टी से लीपकर ऊँची वेदी बना जल से छिड़के अग्नि स्थापन कर धान पाक में धान के तुषों वा पयाल, पाक जौ का हों तो जौ के पयाल कुशा वेदी के सब ओर बिछावे। आज्यभागाहुति आज्याहुति देता है ८। पृथिवी द्यौ० इत्यादि ५ मन्त्र जो मूल कण्डिका में ऊपर हैं इनसे ५ घृत की आहुतिदे ।९। स्थालीपाक की आहुति आगे लिखे अनुसारदे । सीतायै स्वाहा, प्रजायै स्वाहा, यमायै स्वाहा, भूत्यै स्वाहा, ।१०। कोई आचार्य कहते हैं स्वाहा भी न लगावे । ११ । स्वाहा शब्द से आहुति होती है यह श्रुति है इसलिये सूत्र१० की निवृत्ति है । १२ । अग्नि के पास बिछी कुशों पर सीता रक्षकों को बलि देते हैं। "पुरस्तात्०" इस मन्त्रसे पूर्व दिशामें । १३ । फिरदक्षिण में "निमिषावर्म०" इस मन्त्रसे । १४ । फिरपश्चिम में "आसुव प्रभुवो०"। १५। फिर उत्तर में "भीमावायुसमा०" इस मन्त्र से । १६ । प्रकृत=धान या जौ छोड़ अन्य सुगंधित मिष्ट और घृत से पूर्ववत्=बलिकर्म करे ।१७। स्त्रियां भी बलिकर्म यज्ञकरैं ऐसा आचारहै। १८।कर्म समाप्तिपर ब्राह्मणों को भोजन करावे । ब्राह्मणों को भोजन करावे ।१९। दोबार उच्चारण ग्रन्थ की समाप्तिका चिन्ह है ।

तीसरा काण्ड कण्डिका १

अनाहिताग्नेर्नवप्राशनम् । १ । नवँ स्थालीपाकँ श्रपयित्वाऽऽज्यभागाविष्ट्वाऽऽज्याहुती जुहोति 'शतायुधाय शतवीर्याय शतोतये अभिमातिषाहे । शतं यो नः शरदोऽजीजानिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा स्वाहा । ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति । तेषां योऽज्यानिमजीतिमावहात् तस्मै नो देवाः परिधत्तेह सर्वे स्वाहा, इति । २ । स्थालीपाकस्याग्रयणदेवताभ्यो हुत्वा जुहोति स्विष्टकृतेच ' स्विष्टमग्ने अभि तत् पृणीहि विश्वांश्च देवः पृतना अभिष्यक् । सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुःस्वाहा, इति । ३ । अथ प्राश्नाति—' अग्निः प्रथमः प्राश्नातु स हि वेद यथा हविः । शिवा अस्मभ्यमोषधीः कृणोतु विश्वचर्षणिः । भद्रान्नः श्रेयः समनैष्ट देवास्त्वयाऽवसेन समशीमहि त्वा । स नो मयोभूः पितवाविशस्व शं तोकाय तनुवे स्योनः, इति । ४ । अन्नपतीयया वा । ५ । अथ यवानाम्—एतमुत्यं मधुना संयुतं यवं सरस्वत्या अधिवनाय चकृषुः । इन्द्र आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः, इति । ६ । ततो ब्राह्मण भोजनम् । ७ ॥१॥

कण्डिका २ (आग्रहायणी कर्म)

मार्गशीर्ष्यां पौर्णमास्यामाग्रहायणीकर्म । १ । स्थालीपाकꣳश्रपयित्वा अवदानवदाज्याहुती हुत्वाऽपरा जुहोति—यां जनाः प्रतिनन्दन्ति रात्रीं धेनुमिवायतीम् । संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली स्वाहा । संवत्सरस्य प्रतिमा या त्वाँ रात्रिमुपास्महे । प्रजाँ सुवीर्यां कृत्वा दीर्घमायुर्व्यश्नवै स्वाहा । संवत्सराय परिवत्सरायेदावत्सरायेद्वत्सराय वत्स-

राय कृणुता वृहच्छ्रमः। तेषां वय सुमतौ यज्ञियानां ज्योगजीता अहुताः स्याम स्वाहा। ग्रीष्मो हेमन्त उतनो वसन्तः शिवा वर्षा अभया शरन्नः। तेषामृतूनां शत शारदानां निवात एषामभये वसेम स्वाहेति। २। स्थालीपाकस्य जुहोति सोमाय मृगशिरसे, मार्गशीर्ष्यै पौर्णमास्यै हेमन्ताय चेति। ३। प्राशनान्ते सक्तुशेष शूर्पेन्युप्योपनिष्क्रमणप्रभृत्यामार्जनात्।४। मार्जनान्त उत्सृष्टो बलिरित्याह। ५। पश्चादग्ने स्वस्तरमास्तीर्याहतं च वास आस्तुता अहतवाससः प्रत्यवरोहन्ति दक्षिणतः स्वामी जायोत्तरा यथाकनिष्ठमुत्तरतः। ६। दक्षिणतो ब्रह्माणमुपवेश्योत्तरत उदपात्रं शमीशाखासीतालोष्टाश्मनो निधायाग्निमीक्षमाणो जपति—अयमग्निर्वीरतमोऽयं भगवत्तमः सहस्रसातमः। सुवीर्योऽयां श्रैष्ठ्ये दधातु नौ, इति। ७। पश्चादग्नेः प्राञ्चमञ्जलिं करोति। ८। दैवीं नावमिति तिसृभिः स्वस्तरमारोहन्ति। ९। ब्रह्माणमामन्त्रयते ब्रह्मन् प्रत्यवरोहाम, इति।१०। ब्रह्मानुज्ञाताः प्रत्यवरोहन्ति 'आयुःकीर्तिर्यशो बलमन्नाद्यं प्रजाम्, इति। ११। उपेता जपन्ति सुहेमन्तः सुवसन्तः सुग्रीष्मः प्रतिधीयतां नः शिवा नो वर्षाः सन्तु शरदः सन्तु नः शिवाः, इति। १२। स्योना पृथिवीनो भव इति दक्षिणपार्श्वैः प्राक् शिरसः संविशन्ति। १३। उपोत्तिष्ठन्ति ' उदायुषा स्वायुषोत्पर्जन्य य वृधा पृथिव्याः सप्तधामभिः, इति। १४। एवं द्विरपरं ब्रह्मानुज्ञाताः। १५। अधः शयीरं श्चतुरो मासान् यथेष्टं वा। १६ ॥ २ ॥

कण्डिका ३ (अष्टका कर्म)

ऊर्ध्वमाग्रहायण्यास्तिस्त्रोऽष्टकाः ॥ १॥ ऐन्द्री वैश्वदेवी प्राजापत्या पित्र्येति ॥ २॥ अपूपमांसशाकैर्यथासंख्यम् ॥ ३॥ प्रथमाष्टका पञ्चाष्टम्याम् ॥४॥ स्थालीपाकं श्रपयित्वाऽऽज्य-

भागाविष्ठाऽऽज्याहुतीर्जुहोति त्रि ॅ शतस्त्वसारख्पयन्ति निष्कृ-
ति ॅ समानं वेतुं प्रतिमुञ्चमानाः । ऋतू ॅ स्तन्वते कवयः प्रजा-
नतीर्मध्येछन्दसः परियन्ति भास्वतीः स्वाहा ॥ ज्योतिष्मती
प्रतिमुञ्चते नभोरात्री देवी सूर्यस्य व्रतानि । विपश्यन्ति पशवो
जायमाना नानारूपा मातुरस्या उपस्थे स्वाहा ॥ एकाष्टका
तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम् । तेन दस्यून्
व्यसहन्त देवा हन्ताऽसुराणामभवच्छचीभिः स्वाहा ॥ अना-
नुजा नुनुजां मामकर्त सत्यं वदन्त्यन्विच्छ एतत् । भूयासमस्य
सुमतौ यथायूयमन्या वो अन्यामति मा प्रयुक्त स्वाहा ॥
अभून्मम सुमतौ विश्ववेदा आष्टप्रतिष्ठामविदद्धि गाधम् ॥
भूयासमस्य सुमतौ यथायूयमन्या वो अन्यामतिमा प्रयुक्त
स्वाहा ॥ पञ्चव्युष्टीरनुपञ्चदोहा गां पञ्चनाम्नी मृतवोऽनुपञ्च ।
पञ्चदिशः पञ्चदशेनक्लृप्ताः समानमूर्ध्नीरधिलोकमेक ॅ स्वाहा ॥
ऋतस्य गर्भः प्रथमा व्यूषिष्यपामेका महिमानं बिभर्ति ॥
सूर्यस्यैका चरति निष्कृतेषु घर्मस्यैका सवितैकांनियच्छतु
स्वाहा ॥ या प्रथमा व्यौच्छत् साधेनुरभवद्यमे ॥ सानः पय-
स्वती धुक्ष्वोत्तरामुत्तरा ॅ समा ॅ स्वाहा ॥ शुक्रऋषभा नभसा
ज्योतिषाऽऽगाद् विश्वरूपा शबलीः अग्निकेतुः । समानमर्थ ॅ
स्वपस्यमाना बिभ्रती जरामजर उष आगाः स्वाहा । ऋतूनां
पत्नी प्रथमेयमागादह्नां नेत्री जनित्री प्रजानाम् । एका सती
बहुधोषोव्युच्छस्यऽजीर्णा त्वं जरयसि सर्वमन्यत् स्वाहेति ।
।। स्थालीपाकस्य जुहोति 'शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्ष ॅ
शन्नो द्यौरभयं कृणोतु । शन्नो दिशः प्रदिश आदिशो नोऽहो
रात्रे कृणुतं दीर्घमायुर्व्यश्नवै स्वाहा । आपो मरीचीः परिपान्तु
सर्वतो धाता समुद्रो अपहन्तु पापम् । भूतं भविष्यदकृन्तद् वि-
श्वमस्तु मे ब्रह्माधिगुप्तः सुरक्षितः स्या ॅ स्वाहा । विश्वेआदित्या

वसवश्च देवा रुद्रा गोप्तारो मरुतश्च सन्तु । ऊर्जं प्रजाममृतं-
दीर्घमायुः प्रजापतिर्मेपि परमेष्ठी दधातु नः स्वाहेति । ६ ।
अष्टकायै स्वाहेति ।७। मध्यमा गवा ।८। तस्यै वपां जुहोति
'वह वपां जातवेदः पितृभ्यः, इति । ९ । श्वोऽन्वष्टकासु स-
र्वासां पार्श्वसक्थिसव्याभ्यां परिवृते पिण्डपितृयज्ञवत् ।१०।
स्त्रीभ्यश्चोपसेचनं चकर्षु सुरया तर्पणेन चाञ्जनानुलेपनं
स्रजश्च । ११ । आचार्यायान्तेवासिभ्यश्चानपत्येभ्य इच्छन् ।
१२ । मध्या वर्षे च तुरीया शाकाष्टका । १३ ॥३॥

* कण्डिका ४ (शालाकर्म)

अथातः शालाकर्म । १ । पुण्याहे शालां कारयेत् ।२। तस्या अवटमभिजुहोति 'अच्युताय भौमाय स्वाहा' इति ।३। स्तम्भमुच्छ्रयति 'इमामुच्छ्रयामि भुवनस्य नाभिं वसोर्धारां प्रतरणीं वसूनाम्। इहैव ध्रुवां निमिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठतु घृतमुक्षमाणा । अश्वावती गोमती सूनृतावत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय आत्वा शिशुराक्रन्दत्वा गावो धेनवो वाश्यमानाः। आत्वा कुमारस्तरुण आवत्सो जगदैः सह । आत्वा परिस्रुतः कुम्भ आदध्नः कलशैरुप । क्षेमस्य पत्नी बृहती सुवासा रयिं नो धेहि सुभगे सुवीर्यम् । अश्वावद् गोमदूर्जस्वत् पर्णं वनस्पतेरिव। अभि नः पूर्यतां रयिरिदमनुश्रेयो वसान इति

* इस कण्डिका के पाठ संस्कारविधि में भी कुछेक हैं ॥

चतुरः प्रपद्यते । ४ । अभ्यन्तरतोऽग्निमुपस-
माधाय दक्षिणतो ब्रह्माणमुपवेश्योत्तरतो उद-
पात्रं प्रतिष्ठाप्य स्थालीपाकं श्रपयित्वा निष्क्र-
म्य द्वारसमीपे स्थित्वा ब्रह्माणमामन्त्रयते
'ब्रह्मन् प्रविशामि, इति ।५। ब्रह्मणानुज्ञातः प्रवि
शति 'ऋतं प्रपद्ये शिवं प्रपद्ये, इति ।६। आज्य
ᳪ संस्कृत्य ' इहरतिः , इत्याज्याहुती हुत्वाऽ-
परा जुहोति–' वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्
स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो
जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ।
वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभि-
रश्वेभिरिन्दो । अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव
पुत्रान् प्रति तन्नो जुषस्व (शंनो भव द्विपदेशं
चतुष्पदे स्वाहा) वास्तोष्पते शग्मया सᳪ
सदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या पाहि क्षेम
उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः
स्वाहा । अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्या-
विशन् । सखा सुशेव एधि नः स्वाहा, इति ।७।
स्थालीपाकस्य जुहोति ' अग्निमिन्द्रं बृहस्पतिं

विश्वान् देवानुपह्वये । सरस्वतीं च वाजीं च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा । सर्पदेवजनान् त्सर्वान् हिमवन्तꣳ सुदर्शनम् । वसूंश्च रुद्राना दित्यानीशानं जगदैः सह । एतान् सर्वान् प्रपद्येऽहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा । पूर्वाह्ण मपराह्णं चोभौ मध्यंदिना सह । प्रदोषमर्द्ध रात्रिं च व्युष्टां देवीं महापथाम्, एतान् त्सर्वान् प्रपद्येऽहं वास्तु मे दत्तवाजिनःस्वाहा । कर्तारं च विकर्त्तारं विश्वकर्माणमोषधींश्च वनस्पतीन् । एतान् सर्वान् प्रपद्येऽहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा । धातारं च विधातारं निधीनां च पतिꣳ सह । एतान् सर्वान् प्रपद्येऽहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा । स्योनꣳ शिवमिदं वास्तु दत्तं ब्रह्मप्रजापती । सर्वाश्च देवताः स्वाहा, इति । ८ । प्राशनान्ते कांस्येसम्भारानोप्योदुम्बर पलाशानि ससुराणि शाड्वलं गोमयं दधि मधु घृतं कुशान् यवांश्चासनोपस्थानेषु प्रोक्षेत् । ९ । पूर्वे सन्धावभिमृशति—श्रीश्च त्वा यशश्च पूर्वे सन्धौ गोपायेताम्, इति । १० । दक्षिणे सन्धावभिमृशति 'यज्ञश्च त्वा दक्षिणा च दक्षिणे सन्धौ

गोपायेताम् , इति । ११ । पश्चिमे सन्धावभिमृशति ' अन्नं च त्वा ब्राह्मणश्च पश्चिमे सन्धौ गोपायेताम्, इति । १२ । उत्तरे सन्धावभिमृशति 'ऊर्क् च त्वा सूनृता चोत्तरे सन्धौ गोपायेताम्, इति । १३ । निष्क्रम्य दिश उपतिष्ठते 'केता च मा सुकेता च पुरस्ताद् गोपायेतामित्यग्निर्वै केताऽऽदित्यः सुकेता तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पुरस्ताद् गोपायेतामिति ।१४ । अथ दक्षिणतो गोपायमानं च मा (रक्षमाणा) च दक्षिणतो गोपायेतामिति*अहर्वै गोपायमानं रात्री रक्षमाणा ते प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु ते मा दक्षिणतो गोपायेतामिति । १५ । अथ पश्चात् दीदिविश्च मा जागृविश्च पश्चाद् गोपायेतामित्यन्नं वै दीदिविःप्राणो जागृविस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पश्चाद् गोपायेतामिति ।१६। अथोत्तरतोऽस्वप्नश्च माऽनवद्राणश्चोत्तरतो गोपायेतामिति चन्द्रमा वा अस्वप्नो ह्यहर्वै गोपायमानं रात्रीरक्षमाणा ते प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु ते मा दक्षिणतो गोपायेतां वायुरनवद्राणस्तो प्रप-

भूताभ्यां नमोऽस्तु तौमा त्वन्तो गोपायेतामिति ।१७। निष्ठिनां प्रपद्यते धर्मस्थूणा राजश्रीस्तूप महोरात्रे द्वारफलके, इन्द्रस्य गृहा वसुमन्तो वरूथिनस्तानहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सह यन्मे किञ्चिदस्त्युपहूतः सर्वं गणः सखाय साधु संवृतः तां त्वाशालेऽरिष्टवीरा गृहानः सन्तु सर्वतः' इति ।१८। ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥ १९ ॥

कण्डिका ५ (मणिकावधान)

अथातो मणिकावधानम् । १ । उत्तरपूर्वस्यां दिशियूप वद्वटं खात्वा कुशानास्तीर्याक्षतानरिष्टकांश्चान्यानि चाभि-मङ्गलानि च तस्मिन् मिनोति मणिकं 'समुद्रोऽसि' इति ।२। अप आसिञ्चति—'आपो रेवतीः क्षयथाहि वस्वः क्रतुं च भद्रं बिभृथामृतं चरायश्चस्थस्य पत्यस्य पत्नी सरस्वती तद्गृणते वयोधाद्' इति । ३ । आपोहिष्ठेति च तिसृभिः । ४ । ततो ब्राह्मणभोजनम् । ५ । ॥ ५ ॥

६ कण्डिका

अथातः शीर्षरोगभेषजम् ।१। पाणी प्रक्षाल्य भ्रुवौ विमार्ष्टि—'चक्षुर्भ्यां ॅ श्रोत्राभ्यां गोदानः छुबुकादधि । यक्ष्मं ॅ शीर्षण्य ॅ रराटाद्विवृहामीमम्' इति । २ । अहुँषेद् 'अव-भेक विरूपाक्ष श्वेतपक्षो महायशाः । अथा चित्रपक्ष शिरो माऽस्याभितापीः' इति । ३ । लभ्यो ह्येव भवति । ४ ।

७ कण्डिका

चतूलपरिमेहः ।१। जोऽस्यपक्षोवविपाको स्वसूत्रमासिच्या-

पवलविंत्रिः परिषिञ्चन् परीयात् 'परित्वा गिरेरहं परि मातुः परि स्वसुः। परिपित्रोश्च भ्रात्रोश्च सख्येभ्यो विसृजाम्यहम्। उलूल परिमीढोऽसि परिमीढःक्षगमिष्यसि इति ।२। स यदि श्राम्याद् दावाग्निमुपसमाधाय घृताक्तानि कुशेषुवानि जुहुयात् 'परित्वा हुलनो हुल निवृत्तेन्द्र वीरुधः इन्द्रपाशेनछित्वा मह्यं मुञ्चाऽथान्यमानयेदिति' ।३। क्षेम्यो क्षेम भवति ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥

(कण्डिका ८)

शूलगवः ।१। स्वर्ग्यः पशव्यः पुत्र्यो धन्यो यशस्य आयुष्यः ।२। औपासनमरण्यं हृत्वा वितानं साधयित्वा रौद्रं पशुमालभेत ।३। साण्डम् ।४। गौर्वाशब्दात्।५। वपां श्रपयित्वा स्थालीपाकमवदानानि च रुद्राय वपामन्तरिक्षाय स्थालीपाकमिश्राण्यवदानानि जुहोति 'अग्नये रुद्राय शर्वाय पशुपतय उग्रायाशनये भवाय महादेवायेशानायेति च ।६। वनस्पतिः ।७। स्विष्टकृदन्ते ।८। दिग्व्याघारणम् ।९। व्याघारणान्तेपत्नीःसंयाजयन्तीन्द्राण्यै रुद्राण्यै शर्वाण्यै भवान्या अग्निं गृहपतिमिति।१०। लोहितंपलाशेषुकूर्चेषु रुद्राय सेनाभ्यो बलिं हरति 'यास्ते रुद्र पुरस्तात् सेनास्ताभ्य एष बलिस्ताभ्यस्ते नमः। यास्ते रुद्र दक्षिणतःसेनास्ताभ्य एष बलिस्ताभ्य स्ते नमः। यास्ते रुद्र पश्चात् सेनास्ताभ्य एष बलिस्ताभ्यस्ते नमः। यास्ते रुद्रोत्तरतः सेनास्ताभ्य एष बलिस्ताभ्यस्ते नमः। यास्ते रुद्रोपरिष्टात् सेनास्ताभ्य एष बलिस्ताभ्यस्ते नमः। यास्ते रुद्राधस्तात् सेनास्ताभ्य एष बलिस्ताभ्यस्ते नमः' इति।११। ऊवध्यं लोहितलिप्तमग्नौ प्रास्यत्यधोवा निखनन्ति।१२। अनुवातं पशुमवस्थाप्य रुद्रैरुपतिष्ठते प्रथमोत्तमाभ्यां वाऽनुवाकाभ्याम्।१३। नैतस्य पशो-

ओम्ँ हरति । १४ । एतेनैव गोयज्ञो व्याख्यातः । १५ । पायसेनानर्थलुप्तः ।१६। तस्य तुल्यवया गौर्दक्षिणा ॥ १७ ॥८॥

कण्डिका ९

अथ वृषोत्सर्गः । १। गोयज्ञेन व्याख्यातः । २ । कार्तिक्यां पौर्णमास्याँ रेवत्यां वाऽऽश्वयुजस्य । ३ । मध्ये गवाँ सुसमिद्धमग्निं कृत्वाऽऽज्यँ संस्कृत्य 'इह रतिः' इति षट् जुहोति प्रतिमन्त्रम् ।४। पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षतु सर्वतः पूषा वाजँ सनोतु नः स्वाहा, इति पौष्णस्य जुहोति । ५। रुद्रान् जपित्वैकवर्णं द्विवर्णं वा यो वा यूथं छादयति यं वा यूथं छादयेद् रोहितो वैव स्यात् सर्वाङ्गैरुपेतो जीववत्सायाः पयस्विन्याः पुत्रो यूथे च रूपवत्तमः स्यात् तमलंकृत्य यूथे मुख्याश्चतस्रो वत्सतर्यस्ताश्चालंकृत्य "एतं युवानं पतिं वो ददामि तेन क्रीडन्तीश्चरथ प्रियेण । मानः साप्त जनुषा सुभगा रायस्पोषेण समिषा मदेम" इत्येतयैवोत्सृजेरन् । ६ । मध्यस्थ मभिमन्त्रयते 'मयोभूः' इत्यनुवाकशेषेण । ७। सर्वासां पयसि पायसँ श्रपयित्वा ब्राह्मणान् भोजयेत् । ८ । पशुमप्येके कुर्वन्ति । ९ । तस्य शूलगवेन कल्पो व्याख्यातः । १० ॥

कण्डिका १०

अथोदककर्म ।१। अद्विवर्षे प्रेते मातापित्रोराशौचम् ॥२॥ शौचमेवेतरेषाम् । ३ । एकरात्रं त्रिरात्रं वा । ४ । शरीरमदग्ध्वा निखनन्ति । ५। अन्तः सूतके चेदोत्थानादाशौचँ सूतकवत् । ६ । नात्रोदककर्म । ७ । द्विवर्षप्रभृति प्रेतमाश्मशानात् सर्वेऽनुगच्छेयुः । ८ । यमगाथां गायन्तो यमसूक्तं च जपन्त इत्येके । ९ यद्युपेतो भूमिजोषणादिसमानमाहिताग्नेरोदकान्तस्य गमनात् । १० । शालाग्निनादहन्त्येनमाहितश्चेत् । ११ । तूष्णीं ग्रामाग्निनेतरम् । १२ । संयुक्तं मैथुनं वोदकं याचेरन्

'उदकं करिष्यामहे' इति ।१३। 'कुरुध्वं मा चैवं पुनः' इत्यशतवर्षे प्रेते ।१४। 'कुरुध्वम्' इत्येवेतरस्मिन् ।१५। सर्वे ज्ञातयोऽपोऽभ्यवयन्त्यासप्तमात्पुरुषाद्दशमाद्वा ।१६। समानग्रामवासे यावत्सम्बन्धमनुस्मरेयुः ।१७। एकवस्त्राः प्राचीनावीतिनः ।१८। सव्यस्यानामिकयापनोद्य 'अप नः शोशुचदघम्' इति ।१९। दक्षिणामुखा निमज्जन्ति ।२०। प्रेतायोदकं सकृत् प्रसिञ्चन्त्यञ्जलिना 'असावेतत्त उदकम्' इति ।२१। उत्तीर्याऽशुचौ देशे शाद्वलवत्युपविष्टांस्तत्रैतानपवदेयुः ।२२। अनवेक्षमाणा ग्राममायान्ति रीतिभूताः कनिष्ठपूर्वाः ।२३। निवेशनद्वारे पिचुमन्दपत्राणि विदश्याचम्योदकमग्निं, गोमयं, गौरसर्षपांस्तैलमालभ्याश्मानमाक्रम्य प्रविशन्ति ।२४। त्रिरात्रं ब्रह्मचारिणोऽधःशायिनो न किंचन कर्म कुर्युर्न प्रकुर्वीरन् ।२५। क्रीत्वा लब्ध्वा वा दिवैवान्नमश्नीयुरमांसम् ।२६। प्रेताय पिण्डं दत्त्वावनेजनदानप्रत्यवनेजनेषु नाम ग्राहम् ।२७। मृन्मये तां रात्रीं क्षीरोदके विहायसि निदध्युः 'प्रेतात्र स्नाहि' इति ।२८। त्रिरात्रं शावमाशौचम् ।२९। दशरात्रमित्येके ।३०। न स्वाध्यायमधीयीरन् ।३१। नित्यानि निवर्तेरन् वैतानवर्जम् ।३२। शालाग्नौ चैके ।३३। अन्य एतानि कुर्युः ।३४। प्रेतस्पर्शिनो ग्रामं न प्रविशेयुरानक्षत्रदर्शनात् ।३५। रात्रौ चेदादित्यस्य ।३६। प्रवेशनादि समानमितरैः ।३७। पक्षं द्वौ वाऽऽशौचम् ।३८। आचार्ये चैवम् ।३९। मातामहयोश्च ।४०। स्त्रीणां चाप्रत्तानाम् ।४१। प्रत्तानामितरे कुर्वीरन् ।४२। ताश्च तेषाम् ४३ प्रोषितश्चेत् प्रेयाच्छ्रवणप्रभृति कृतोदकाः कालशेषमासीरन् ।४४। अतीतश्चेदेकरात्रं त्रिरात्रं वा ।४५। अथ-

कामोदकान्यृत्विक्श्वशुर सखिसम्बन्धि मातुलभागिनेयानाम् ।४६। प्रत्तानां च । ४७ । एकादश्यामयुग्मान् ब्राह्मणान् भोजयित्वा मांसवत् । ४८ । प्रेतायोद्दिश्य गामप्येके घ्नन्ति । ४९ । पिण्डकरणे प्रथमः पितृणां प्रेतः स्यात् पुत्रवांश्चेत् । ५० । निवर्तेत चतुर्थः । ५१ । संवत्सरं पृथगेके । ५२ । न्यायस्तु न चतुर्थः पिण्डो भवतीतिश्रुतेः ।५३ । अहरहरन्नमस्मै ब्राह्मणायोदकुम्भं च दद्यात् ।५४। पिण्डमप्येके निपृणन्ति ।५५।१०

कण्डिका ११

पशुश्चेदागारमागच्छेदग्नीन् परीत्य पलाशशाखां निहन्ति । १ । परिव्ययणोपाकरणनियोजनप्रोक्षणान्यावृता कुर्याद्यथान्यत् । २ । परिपशव्ये हुत्वा तूष्णीमपराः पञ्च ।३। वपां श्रपयित्वा चाभिघारयेद् देवताञ्चादिशेत् । ४ । उपाकरणनियोजनप्रोक्षणेषु स्थालीपाके चैवम् ।५। वपां हुत्वाऽवदानान्यवद्यति । ६ । सर्वाणि त्रीणि पञ्च वा । ७ । स्थालीपाकमिश्राण्यवदानानि जुहोति । ८ । पश्वङ्गं दक्षिणा । ९ । यद्दैवते तद्दैवतं यजेत तस्मै च भागं कुर्यात्तं च ब्रूयाद् 'इममनुप्रापय, इति । २१ । मध्यन्तरे नावं कारयेन्नवा । ११ ॥ ११ ॥

कण्डिका १२ (अवकीर्णिप्रायश्चित्त)

अथातोऽवकीर्णिप्रायश्चित्तम् । १ । अमावास्यायां चतुष्पथे गर्दभपशुमालभेत । २ । निर्ऋतिं पाकयज्ञेन यजेत । ३ । अप्स्ववदानहोमः । ४ । भूमौ पशुपुरोडाशश्रपणम् । ५ । तां त्वचं परिदधीत ।६। ऊर्ध्ववालामित्येके ।७। संवत्सरं भिक्षाचर्यं चरेत् स्वकर्म परिकीर्तयन् ।८। अथापरमाज्याहुती जुहोति " कामावकीर्णोऽस्म्यवकीर्णोऽस्मि काम कामाय स्वाहा । कामाभि*द्रुग्धोऽस्म्यभिद्रुग्धोऽस्मि काम कामाय स्वाहा "

* द्रुग्धोऽस्मि इत्यपिपाठः

इति । ९ । अथोपतिष्ठते "सम्मा सिञ्चन्तु मरुतः समिन्द्रः सं बृहस्पतिः । सं माऽयमग्निः सिञ्चन्तु प्रजया च धनेन च" इति । १० । एतदेव प्रायश्चित्तम् । ११ ॥१२॥

(कण्डिका १३)

अथातः सभा प्रवेशनम् । १ । सभामभ्येति 'सभाङ्गिरसि नादिर्नामासि त्विषिर्नामासि तस्यै ते नमः, इति । २ । अथ प्रविशति 'सभा च मा समितिश्चोभे प्रजापतेर्दुहितरौ सचेतसौ । यो मानविद्यादुपमा स तिष्ठेत स चेतनो भवतु शंसथे जने, इति । ३ । पर्षदमेत्य जपेत् 'अभिभूरहमागमं विराडम्प्रतिवाश्यः । अस्याः पर्षद ईशानः सहसा सुदुष्टरो जनः, इति । ४ । स यदि मन्येत 'क्रुद्धोयम्' इति, तमभिमन्त्रयते 'या त एषा रराट्या तनूर्मन्योः क्रोधस्य नाशनी । तां देवा ब्रह्मचारिणो विनयन्तु सुमेधसः । द्यौरहं पृथिवी चाहं तौ ते क्रोधं नयामसि गर्भमश्वतर्यैवहाशौ, इति । ५ । अथ यदि मन्येत द्रुग्धोऽयमिति तमभिमन्त्रयते 'तान्ते वाचमास्य आदत्ते हृदय आदधे । यत्र यत्र निहिता वाक् तां ततस्तत आददे । यदहं ब्रवीमि तत्सत्यमधरो भवतोद्यस्व, इति । ६ । एतदेव वशीकरणम् । ७॥१३॥

कण्डिका १४

अथातो रथारोहणम् । १ । युंक्तेति रथं समभ्येत्य युक्त इति प्रोक्ते साविराडित्येत्य चक्रे अभिमृशति । २ । 'रथन्तरमसि' इति दक्षिणम् । ३ । 'बृहदसि, इत्युत्तरम् । ४ । 'वामदेव्यमसि, इति कूबरीन् । ५। हस्तेनोपस्थमभिमृशति 'अङ्कौ न्यङ्कावभितो रथं यौ ध्वान्तं वाताग्रमनुसञ्चरन्तौ । दूरेहेतिरिन्द्रियावान् पतत्रिस्ते नोऽग्नयः पप्रयः पारयन्तु, इति । ६ ।

'नमोमाणिचराय, इति दक्षिणं धुर्यं प्राजति । ७ । अप्राप्य देवताः प्रत्यवरोहेत् अप्रति ब्राह्मणान् मध्ये गा अभिक्रम्य पितॄन् । ८ । न स्त्रीब्रह्मचारिणौ सारथी स्याताम् ।९ । मुहूर्तमतीयाय जपेद् 'इह रतिरिहरमध्वम्,। १०। एके मास्त्विह रतिः इति च, । ११ । स यदि दुर्बलो रथः स्यात् समारुह्य जपेद् ' अयं वामाश्विना रथो मा दुर्गे मास्तरोषद् इति । १२। स यदि भज्यात् स्तम्भमुपस्पृश्य भूमिं वा जपेद् ' एष वामश्विना रथो मा दुर्गे मा स्तरोरिषद् इति ।१३ । तस्य न काचनार्तिर्न रिष्टिर्भवति । १४ । यात्वाऽध्वानं विमुच्य रथं यवसोदके दापयेद् ' एष उ ह वाहनस्याभपह्नव, इति श्रुतेः । १५ ॥ १४ ॥

कण्डिका १५

अथातो हस्त्यारोहणम् । १ । एत्य हस्तिनमभिमृशति ' हस्तियशसमसि हस्तिवर्चसमसि , इति । २ । अथारोहति ' इन्द्रस्य त्वा वज्रेणाभितिष्ठामि स्वस्ति मा सम्पारय,इति । ३ । एतेनैवाश्वारोहणं व्याख्यातम् । ४ । उष्ट्रमारोक्ष्यन्नभिमन्त्रयते 'त्वाष्ट्रोऽसित्वष्टृ देवत्यः स्वस्ति मा सम्पारय, इति । ५ । रासभमारोक्ष्यन्नभिमन्त्रयते 'शूद्रोऽसि शूद्रजन्माऽऽग्नेयो वै द्विरेताः स्वस्ति मा सम्पराय, इति ॥ ६ । पन्थानमभिमन्त्रयते ' नमोरुद्राय पथिषदे स्वस्ति मा सम्पारय, इति । ७ । चतुष्पथमभिमन्त्रयते ' नमोरुद्राय चतुष्पथसदे स्वस्ति मा सम्पारय, इति । ८ । नदीमुत्तरिष्यन्नभिमन्त्रयते ' नमोरुद्रायाप्सुषदे स्वस्ति मा सम्पारय, इति ।९। नावमारोक्ष्यन्नभिमन्त्रयते सुनावम्, इति । १० । उत्तरिष्यन्नभिमन्त्रयते ' सुत्रामाणम् , इति । ११ । वनमभिमन्त्रयते ' नमो रुद्राय

वनसदे स्वस्ति मा सम्पारय, इति । १२ । गिरीमभिमन्त्रयते 'नमो रुद्राय गिरिषदे स्वस्ति मा सम्पारय, इति । १३ । श्मशान मभिमन्त्रयते 'नमो रुद्राय पितृषदे स्वस्ति मा सम्पारय, इति ।१४। गोष्ठमभिमन्त्रयते 'नमो रुद्राय शकृत्पिण्डसदे स्वस्ति मा सम्पारय, इति । १५ । यत्र चा न्यत्रापि 'नमो रुद्राय, इत्येव ब्रूयात्' रुद्रो ह्येवेद ँ सर्वम्, इति श्रुतेः । १६ । सिचाऽवधूताऽभिमन्त्रयते 'सिगसि न वज्रोऽसि नमस्ते अस्तु मामाहि ँ सीः, इति ।१७। स्तनयित्नुमभिमन्त्रयते 'शिवा नो वर्षाः सन्तु शिवा नः सन्तु हेतयः । शिवा नस्ताः सन्तु यास्त्व ँ सृजसि वृत्रहन्, इति । १८ । शिवां वाश्यमाना मभिमन्त्रयते 'शिवो नाम, इति । १९ । शकुनिं वाश्यमानमभिमन्त्रयते 'हिरण्यपर्ण शकुने देवानां प्रहितं गम । यमदूत नमस्ते ऽस्तु किन्त्वा काक्षीं रिणोब्रवीद्, इति । २० । लक्षण्यं वृक्ष मभिमन्त्रयते 'मा त्वाऽशनिर्मा परशुर्मा वातो मा राजप्रेषितो दण्डः। अङ्कुरास्ते प्ररोहन्तु निवातेत्वाऽभिवर्षतु । अग्निष्टे मूलं माहि ँ सीत् स्वस्ति ते ऽस्तु वनस्पते स्वस्ति मे ऽस्तु वनस्पते, इति । २१ । सयदि किञ्चिल्लभेत तत्प्रतिगृह्णातु 'द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु' इति साऽस्य न ददतः क्षीयते भूयसीच प्रतिगृहीता भवति । २२ । अथयद्योदनं लभेत तत् प्रतिगृह्य 'द्यौस्त्वा, इति तस्य द्विःप्राश्नाति 'ब्रह्मात्वाप्राश्नातु ब्रह्मात्वा प्राश्नातु, इति । २३ । अथ यदि कन्यं लभेत, तत्प्रतिगृह्य द्यौस्त्वा, इति तस्यत्रिः प्राश्नाति ब्रह्मा त्वाप्राश्नातु ब्रह्मा त्वा प्राश्नातु ब्रह्मात्वा पिबतु, इति । २४ ॥ १५ ॥ *

*नोट-काशीके छपे पुस्तक में कण्डिका १५ सेही १६ भी मिलादी है । यहीं समाप्त कर दिया है। और क० १५ के २२ ही सूत्र हैं ॥

कण्डिका १६

अथातोऽधीत्याधीत्यानिराकरणं 'प्रतीकं मे विचक्षणं जिह्वा मे मधु यद्वचः। कर्णाभ्यां भूरि शुश्रुवे मा त्वं हार्षीः श्रुतं मयि। ब्रह्मणः प्रवचनमसि ब्रह्मणः प्रतिष्ठानमसि ब्रह्मकोशोऽसि सनिरसि शान्तिरस्यनिराकरणमसि ब्रह्मकोशं मे विश। वाचा त्वा पिदधामि वाचा त्वाऽपिदधामि स्वरकरणकण्ठ्यौरसदन्त्यौष्ठ्यग्रहणधारणोच्चारणशक्तिर्मयि भवतु। आप्यायन्तु मेऽङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रं यशोबलम्। यन्मे श्रुतमधीतं तन्मे मनसि तिष्ठतु तन्मे मनसि तिष्ठतु। १। ॥१६॥

इति पारस्कर गृह्यसूत्रं समाप्तम्।

परिशिष्टकण्डिका

अथातो वापीकूपतडागारामदेवतायतनपुष्करिण्याः प्रतिष्ठापनं व्याख्यास्यामः। १। तत्रोदगयनआपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे तिथिवारकरणे नक्षत्रे गुणान्वितेतत्र वारुणं यवमयं चरुं श्रपयित्वाज्यभागाविष्ट्वाज्याहुतिर्जुहोति "त्वन्नोअग्नेसत्वन्नो अग्नेइमंमेवरुण तत्वायामि, येते शतमयाश्चायन्नउदुत्तमसुत् त्रिरागा वरुणस्योत्तम्भनमग्नेरनीकमिति दशर्चं हुत्वा। २। स्थालीपाकस्य जुहोत्यग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा वरुणाय स्वाहा यज्ञाय स्वाहोग्राय स्वाहा भीमाय स्वाहा शतक्रतवे स्वाहा व्युष्टयै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहेति यथोक्तं स्विष्टकृत प्राश्नाति जलचराणि क्षिप्त्वालंकृत्य। ३। गांतारयित्वाचार्याय वरं दत्वाकर्णवेष्टकौ वासांसि धेनुर्दक्षिणा। ४। ततो ब्राह्मण भोजनम्॥ ५॥ इति शम्

पारस्करभाषाभाष्य

पृ० ८ में मधुपर्क में पशुवध पर और पृ० २६ पुंसवन में कूर्म पित्त पर पृष्ठ और ३३ के नोट देखने योग्य हैं ॥

पृ० ३६ पर अन्नप्राशन में सूत्र ७ से १२ तक प्रक्षिप्त प्रतीत होते हैं । कारण वहीं लिख दिया है ॥

काण्ड ३ समस्त ही हमने बारीक टाइप से छापा है । उस में प्रक्षिप्तांश बहुत अधिक प्रतीत हुआ है जैसा नीचे की सूची से पता लगेगा ।

काण्ड ३

१ नव प्राशन
२ आग्रहायणी कर्म
३ अष्टका कर्म
४ शाला कर्म
५ मणिकावधान
६ शिर रोग का इलाज
७ वशीकरण
८ शूल गव
९ वृषोत्सर्ग
१० उदक कर्म
११ पशुकल्प
१२ अवकीर्णी
१३ सभा प्रवेश
१४ रथ पर बैठना
१५ हाथी पर चढ़ना
१६ पढ़ा हुआ न भूलना
१ वापी कूप प्रतिष्ठा परिशिष्ट

१—प्राचीन ग्रंथों में अन्तमें पाठ दोवार पढ़ने का ... सो पारस्कर सूत्र में दूसरे काण्ड के अन्त में कण्डिका १७ ब्राह्मणान् भोजयेत, ब्राह्मणान् भोजयेत् ऐसे दोवार है, ऐ पूर्व काण्ड के अन्त में नहीं है इससे भी काण्ड समाप्ति न किन्तु ग्रंथ समाप्ति सीही प्रतीत होती है ॥

२—पूर्वग्रंथों में २ भाग या ४ भागहुवा करतेथे ३ भाग बहु कम होते थे ॥

३—इस समय में दोही काण्डों के कर्मकाण्ड का प्रचार हे जाय तौ बहुत लाभ है तीसरे का भाषाभाष्य छपाने से गौर की हानि होती है वृद्धि नहीं ॥

४—उस का भाषानुवाद भी हम ने इसी लिये नहीं किय कि मांस से यज्ञ या पशुवध हमारे पौराणिक पड़ौस भी कलिवर्जित कहकर उसे करना धर्म नहीं मानते हैं तौ कलियुगी भाषा में उस भाग का अर्थ ही क्या करने की आवश्यकता है ॥

५—हमने मूल इस लिये छापा दिया है कि मूल बना रहै तौ नजाने कोई बात इस से भी उत्तम निकल आवे, इसी लिये उसे बारीक टाइप में छपाया है, ग्रन्थ से अलग नहीं किया है ॥

६—मंत्रों काअर्थ अधिकतर संस्कार चन्द्रिका में भी छपचुका है संक्षेप सेलिखा मंत्रार्थभी समझा नहीं जाताहै विस्तार से लिखने योग्य समय नहीं है, दूसरेसंस्करण में यत्न करूंगा कि मंत्रप्रकाशित [illegible] छांटकरसबकाअर्थवहींकरकेछपाऊं ॥